स्वच्छ भारत
एक कदम स्वच्छता की ओर

G20

आज़ादी का अमृत महोत्सव

मॉयल
MOIL

मॉयल भारती

अंक 10 : अक्टूबर 2023 से मार्च 2024

मॉयल लिमिटेड, मॉयल भवन, 1- ए, काटोल रोड, नागपुर- 440013

भारत सरकार

गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (का.-1), नागपुर

संयोजक: पावर ग्रिड कॉर्पोरेशन ऑफ इंडिया लिमिटेड, नागपुर

प्रमाण पत्र

मॉयल नागपुर को वर्ष 2022-23 के लिए श्रेष्ठ गृह पत्रिका की श्रेणी में कार्यालय की पत्रिका मॉयल भारती को प्रथम पुरस्कार प्रदान किया जाता है।

(हर प्रसाद पाल)
सचिव, नराकास (का.-1)

दिनांक : 29 नवंबर, 2023

(आलोक)
अध्यक्ष, नराकास (का.-1)

अनुक्रमाणिका

क्र	विषय	पेज नं.
1	इस्पात मंत्री जी का संदेश	02
2	इस्पात राज्यमंत्री जी का संदेश	03
3	इस्पात सचिव जी का संदेश	04
4	अध्यक्ष सह प्रबंध निदेशक जी का संदेश	05
5	निदेशक (वित्त) जी का संदेश	06
6	निदेशक (मा.सं.) जी का संदेश	07
7	निदेशक (उ.एवं.यो.) जी का संदेश	08
8	निदेशक (वाणिज्य) जी का संदेश	09
9	मुख्य सतर्कता अधिकारी जी का संदेश	10
10	संपादक मंडल एवं संपादकीय	11
11	मॉयल लिमिटेड ने 61 वर्ष पूर्ण किये	12
12	मॉयल की उपलब्धियाँ	13
13	हिंदी दिवस क्यो मनाया जाता है ?	14
14	हिंदी का मानक स्वरुप	15-17
15	टिप्पणियाँ	18
16	दैनिक कार्य में ध्यान देने योग्य बातें	19
17	टिप्पणी लेखन	20-21
18	हिंदी अंग्रेजी शब्द	22-23
19	शुध्द एवं अशुध्द शब्द	24
20	हिंदी दिवस एवं तृतीय अखिल भारतीय राजभाषा समेलन 2023	25
21	हिंदी पखवाड़ा	26
22	खान स्तर पर हिंदी के प्रसार-प्रचार हेतु आयोजित कार्यक्रम की झलकियाँ	27
23	वाइस टाइपिंग एवं यूनिकोड	28
24	कुछ यादगार पल	29-31
25	राजेश श्रीवास्तव जी की कवितायें	32
26	प्रेमचन्द के उपन्यास जगत् में दलित और किसान – प्रो प्रणव शास्त्री	33-34
27	श्री राम– कवि राधाकांत पाण्डेय	35
28	मॉयल – समाचार पत्र की कुछ झलकियाँ	36-38
29	खनिज और खनन – पी.के. मिश्रा	39-40
30	चले कलम के सुहाने सफर की ओर – पूजा वर्मा	41
31	हीरो और जीरो का देश भारत – अमित कुमार सिंह	42
32	एक दिन मैं भी आकाश मे उड़ान भरुंगा – अमित कुमार सिंह	43
30	डी. ए. वी. स्कूल चिखला के छात्रों की कला	44
31	परिवार के साथ से खुशहाल होता है जीवन – रामअवतार देवांगन	45-46
32	राजभाषा का सरकारी कार्यालय में महत्व – अनिल घरडे	48
33	महिला आरक्षण– अफरोज अख्तर	49
34	सत्य की महिमा– सुखराम ब्रम्हे	50-51
35	नारी शक्ति और सामाजिक संरचना– नीता गुजर	52
36	नशे के कारण बदलती तस्वीर – सोनू वासनिक	53
37	रेत पर लिखा– पत्थर पर लिखा –संदीप देवांगन	54
38	निर्णय लेना – उज्वला राजेश वानखेडे	55
39	एक टोकरी भर मिट्टी – भारती रमेश पिल्ले	56
40	पर्यावरण– शैलेश भिवगडे	57
41	डीप फेक तकनीक – संकटराम ब्रम्हवंशी	58-60

इंसान को कठिनाइयों की आवश्यकता होती है, क्योंकि सफलता का आनंद उठाने के लिए ये जरूरी हैं। - डॉ ए पी जे अब्दुल कलाम

ज्योतिरादित्य मा. सिंधिया

मंत्री
नगर विमानन एवं इस्पात मंत्रालय
भारत सरकार, नई दिल्ली

Minister of
Civil Aviation and Steel,
Government of India, New Delhi

संदेश

मुझे यह जानकर अत्यंत खुशी हो रही है कि मॉयल लिमिटेड के राजभाषा विभाग की पत्रिका "मॉयल भारती" के 10वें अंक का प्रकाशन किया जा रहा है।

हिंदी पत्रिकाएँ राजभाषा के प्रचार-प्रचार में एक महत्वपूर्ण कड़ी का काम करती हैं। इन पत्रिकाओं के माध्यम से जहाँ एक ओर विभिन्न प्रतिभाओं को सामने आने का अवसर मिलता है, वहीं दूसरी ओर कार्यालय की विभिन्न गतिविधियों की झलक भी इसमें देखी जा सकती है।

हम सभी साथियों का यह दायित्व है कि राजभाषा हिंदी का प्रयोग कार्यालय के प्रत्येक क्षेत्र में करें और राजभाषा कार्यान्वयन के लिए निर्धारित लक्ष्यों को प्राप्त करें। यह सराहनीय है कि इस दिशा में एक और कदम हमने बढ़ाया है जिसके फलस्वरूप "मॉयल भारती" के 10वें अंक का प्रकाशन हो रहा है।

इस अंक के प्रकाशन से जुड़े सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को मैं हार्दिक बधाई देता हूँ और आशा करता हूँ कि इस प्रकार के प्रयासों की गति कभी नहीं थमेगी, चूंकि 'हिंदी अपनी शान है, भारत की पहचान है।

ज्योतिरादित्य मा. सिंधिया

फग्गन सिंह कुलस्ते

इस्पात एवं
ग्रामीण विकास राज्य मंत्री
भारत सरकार
उद्योग भवन, नई दिल्ली- 110011

MININSTER OF STATE FOR STEEL
GOVERNMENT OF INDIA
AND RURAL DEVELOPMENT
UDYOG BHAWAN, NEW DELHI-110011

संदेश

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हो रही है कि मॉयल लिमिटेड की पत्रिका "मॉयल भारती" के 10वें अंक का प्रकाशन किया जा रहा है।

पत्र-पत्रिकाओं का प्रकाशन राजभाषा हिंदी के विकास और प्रचार-प्रसार में अपनी विशिष्ट भूमिका निभाता है और इससे हिंदी के प्रसार-प्रचार के लिए अनुकूल वातावरण बनता है। इस पत्रिका के प्रकाशन से संस्थान के अधिकारियों एवं कर्मचारियों को अपनी प्रतिभा प्रदर्शित करने का अवसर प्राप्त हुआ है। मुझे विश्वास है कि पत्रिका में राजभाषा कार्यान्वयन संबंधित सूचनाओं, समावेशित विषयों एवं लेखों के माध्यम से सभी अधिकारियों/कार्मिकों को हिंदी में अधिक से अधिक काम करने की प्रेरणा मिलेगी, सम्पूर्ण समाज को एक सकारात्मक दिशा मिलेगी तथा राजभाषा हिंदी के प्रयोग प्रसार को बल मिलेगा।

मैं मॉयल लिमिटेड के समस्त अधिकारियों और कर्मचारियों के उज्ज्वल भविष्य की कामना करता हूँ तथा गृह पत्रिका "मॉयल भारती" के 10वें अंक के प्रकाशन के लिए अपनी हार्दिक शुभकामनाएं देता हूं।

फग्गन सिंह कुलस्ते

नागेन्द्र नाथ सिन्हा
भा. प्र. से. सचिव

भारत सरकार
इस्पात मंत्रालय
GOVERNMENT OF INDIA
MINISTRY OF STEEL

संदेश

मुझे यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता हो रही है कि मॉयल लिमिटेड की पत्रिका "मॉयल भारती" के 10वें अंक का प्रकाशन किया जा रहा है।

हिंदी भारतीय संस्कृति का आईना है और इसका प्रचार-प्रसार हम सभी देशवासियों का परम कर्तव्य है। विविधता में एकता हमारे देश की विशेषता रही है। राष्ट्रीय एकीकरण के महत्वपूर्ण कार्य में हिंदी भाषा ने सदैव अहम भूमिका निभाई है। अपने दैनिक सरकारी कामकाज में सरल और सहज हिंदी का अधिकाधिक प्रयोग करके हम सभी इस दिशा में अपना योगदान दे सकते हैं।

"मॉयल भारती" के 10वें अंक के लिए मैं इसके संपादन से जुड़े सभी अधिकारियों और कर्मचारियों तथा इसमें प्रकाशित रचनाओं के रचनाकारों को बधाई देता हूं।

शुभकामनाओं सहित.

नागेन्द्र

नागेन्द्र नाथ सिन्हा

अजित कुमार सक्सेना
अध्यक्ष-सह-प्रबंध निदेशक

मॉयल लिमिटेड
(भारत सरकार का उपक्रम)
मॉयल भवन, 1- ए, काटोल रोड,
नागपुर- 440013

संदेश

प्रिय साथियों,

आप सभी को नव वर्ष की हार्दिक शुभकामनाएं!!

मुझे यह जानकर अति प्रसन्नता हो रही है कि मॉयल लिमिटेड के राजभाषा विभाग की पत्रिका "मॉयल भारती" को नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति नागपुर द्वारा निरंतर प्रथम पुरस्कार से सम्मानित किया जा रहा है । यह भी सराहनीय है कि पत्रिका का प्रत्येक छः माही प्रकाशन किया जा रहा है ।

हिन्दी को संघ की राजभाषा के रूप में जो दर्जा मिला है उसे और अधिक पुष्ट करने में हमारी सक्रिय भूमिकाएं बहुत ही आवश्यक एवं महत्वपूर्ण हैं । मॉयल उसी लक्ष्य की ओर अग्रसर है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि इस पत्रिका के माध्यम से सभी अधिकारियों और कर्मचारियों को अपनी प्रतिभा दर्शाने का अवसर मिलेगा।

अंत में, मैं पत्रिका के 10वें अंक के प्रकाशन से जुड़े सभी कार्मिकों का अभिनंदन करते हुए आप सभी को बधाई एवं हार्दिक शुभकामनाएं देता हूँ।

अजित कुमार सक्सेना

मॉयल लिमिटेड
(भारत सरकार का उपक्रम)
मॉयल भवन, 1- ए, काटोल रोड,
नागपुर- 440013

राकेश तुमाने
निदेशक (वित्त)

संदेश

प्रिय साथियों,

आप सभी को नव वर्ष की हार्दिक शुभकामनाएं!!

अत्यंत हर्ष का विषय है कि मॉयल लिमिटेड अपनी हिंदी गृह पत्रिका "मॉयल भारती" के 10वें अंक का प्रकाशन कर रहा है। राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार में गृह पत्रिकाओं का अपना एक अलग ही महत्व होता है । इन पत्रिकाओं के माध्यम से ऐसे सार्थक वातावरण का निर्माण होता है, जहां रचनात्मक प्रतिभाओं को निखरने का अवसर प्राप्त होता है। राजभाषा हिंदी के विकास एवं प्रयोग में वृद्धि के लिए यह एक सराहनीय कदम है।

हमारा देश विभिन्न संस्कृतियों का एक गुलदस्ता है। राजभाषा हिंदी इस सांस्कृतिक विविधता को एक सूत्र में पिरोने का कार्य करती है। हिंदी हमारी राजभाषा ही नहीं, अपितु राष्ट्रीय पहचान भी है। अतः अपने दैनिक कार्यालयीन कार्यों में हिंदी का अधिकाधिक प्रयोग करके हमें गौरवान्वित होना चाहिए।

मैं राजभाषा हिंदी को समर्पित इस पत्रिका के रचनाकारों एवं संपादक मंडल को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं देता हूं।

राकेश तुमाने

जिंदगी तो अपने दम पर ही जी जाती है, दूसरों के कंधे पर तो सिर्फ जनाजे उठाए जाते हैं। भगत सिंह

मॉयल लिमिटेड
(भारत सरकार का उपक्रम)
मॉयल भवन, 1- ए, काटोल रोड,
नागपुर- 440013

उषा सिंह
निदेशक मानव संसाधन

संदेश

प्रिय हिन्दी प्रेमियों,

आप सभी को नव वर्ष की हार्दिक शुभकामनाएं!!

मुझे आपसे साझा करने में खुशी हो रही है कि मॉयल लिमिटेड के राजभाषा अनुभाग द्वारा "मॉयल भारती" पत्रिका का निरंतर प्रकाशन किया जा रहा है। राजभाषा पत्रिका "मॉयल भारती" के निरंतर प्रकाशन ने यह प्रदर्शित कर दिया है कि मॉयल कार्मिकों के हृदय में राजभाषा के प्रति विशेष प्रेम है।

मेरा मानना है कि हिन्दी के प्रयोग में सरल एवं आम प्रचलित शब्दों के प्रयोग पर बल दिया जाए तो इससे राजभाषा के रूप में हिन्दी की व्यापकता को बल मिलेगा और गैर हिन्दी भाषियों को भी हिन्दी में व्यवहार में लाने में सुविधा होगी। इस दिशा में मॉयल भारती का निरंतर प्रयास सराहनीय है। भारत जैसे विशाल देश में हिन्दी अन्य भारतीय भाषाओं के साथ समन्वय करती हुई भारतीय संस्कृति को और गौरान्वित कर रही है।

मैं राजभाषा पत्रिका "मॉयल भारती" के नवीन अंक के प्रकाशन के लिए संपादक मंडल एवं रचनाकारों को बधाई देती हूँ।

उषा सिंह

उषा सिंह

इंतजार करने वाले को उतना ही मिलता है, जितना कोशिश करने वाले छोड़ देते हैं। – डॉ. ए पी जे अब्दुल कलाम

मॉयल लिमिटेड
(भारत सरकार का उपक्रम)
मॉयल भवन, 1- ए, काटोल रोड,
नागपुर- 440013

एम. एम. अब्दुल्ला
निदेशक (उत्पादन एवं योजना)

संदेश

प्रिय साथियों,

आप सभी को नव वर्ष की हार्दिक शुभकामनाएं!!

हर्ष का विषय है कि मॉयल लिमिटेड अपनी राजभाषा पत्रिका "मॉयल भारती" का प्रकाशन नियमित रूप से प्रत्येक छःमाही में कर रहा है।

हिन्दी भाषा का दायरा अत्यंत व्यापक है और यह देश के अधिकांश लोगों द्वारा बोली जाने वाली भाषा है। हिन्दी को देश की राजभाषा का गौरव भी प्राप्त है। आवश्यकता इस बात की है कि हम सब मिलकर एक ऐसा वातावरण बनाएं जिससे राजभाषा की संकल्पना को फलीभूत किया जा सके और इसके माध्यम से सरकारी काम-काज के साथ-साथ जनमानस की भाषा के रूप में स्थापित किया जा सके।

मुझे आशा है कि यह पत्रिका पाठकों को कार्यालय के राजभाषा कार्यकलापों की जानकारी प्रदान करने में भी सफल होगी।

पत्रिका के सफल संपादन एवं प्रकाशन हेतु मेरी शुभकामनाएं।

एम. एम.अब्दुल्ला

इस कदर वाकिफ है मेरी कलम मेरे जज्बातों से, अगर मैं इश्क लिखना भी चाहूँ तो इंकलाब लिखा जाता है। भगत सिंह

मॉयल लिमिटेड
(भारत सरकार का उपक्रम)
मॉयल भवन, 1- ए, काटोल रोड,
नागपुर- 440013

रश्मि सिंह
निदेशक (वाणिज्य)

संदेश

प्रिय साथियों,

आप सभी को नये साल की ढ़ेर सारी शुभकामनाएं !!

अत्यंत हर्ष का विषय है कि मॉयल लिमिटेड की हिंदी गृह पत्रिका "मॉयल भारती" के 10वें अंक का प्रकाशन किया जा रहा है।

कार्यालय की हिंदी गृह पत्रिका "मॉयल भारती" राजभाषा हिंदी का प्रचार-प्रसार करने के साथ ही मॉयल लिमिटेड में कार्यरत अधिकारियों एवं कर्मचारियों की कल्पनाशीलता एवं सृजन कर्म को भी प्रदर्शित करती है, जो कि इसमें प्रकाशित साहित्यिक, तकनीकी लेखों तथा कविताओं द्वारा प्रतिबिंबित होती है। इसके साथ ही, यह पत्रिका कार्यालय के विभिन्न कार्यकलापों को भी सर्वसाधारण के समक्ष प्रस्तुत करने में सक्षम बनेगी।

मैं इस पत्रिका के सफल प्रकाशन में उल्लेखनीय योगदान देने वाले सभी कवियों, लेखकों एवं संपादक मंडल को हार्दिक बधाई और शुभकामनाएं देती हूँ।

रश्मि सिंह

मॉयल लिमिटेड
(भारत सरकार का उपक्रम)
मॉयल भवन, 1- ए, काटोल रोड,
नागपुर- 440013

प्रदीप कामले
मुख्य सतर्कता अधिकारी

संदेश

प्रिय साथियों,

आप सभी को नव वर्ष की हार्दिक शुभकामनाएं!!

अत्यन्त हर्ष का विषय है कि मॉयल लिमिटेड अपनी राजभाषा पत्रिका "मॉयल भारती" के 10वें अंक का प्रकाशन कर रहा है।

मेरा मानना है कि हिन्दी संप्रेषण का एक सशक्त माध्यम है। इसके साथ ही साथ व्याकरण एवं शब्द भंडार की दृष्टि से एक समृद्ध भाषा है। हिन्दी सांस्कृतिक परंपरा की एक प्रबल वाहिनी भी है। अतः हिन्दी का प्रचार प्रसार एवं इसका प्रयोग निःसन्देह जन-उपयोगी है।

पत्रिका के प्रकाशन से जुड़े सभी कार्मिकों, रचनाकारों एवं संपादक मण्डल को मेरी हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं।

प्रदीप कामले

ज्ञान, वास्तविक अर्थों में शिक्षा सत्य की खोज है। यह ज्ञान और आत्मज्ञान से होकर गुजरने वाली एक अंतहीन यात्रा है। - डॉ. ए पी जे अब्दुल कलाम

सम्पादकीय

संपादक मंडल

अजित कुमार सक्सेना
अध्यक्ष
सह प्रबंध निदेशक

उषा सिंह
निदेशक
(मानव संसाधन)

त्रिलोचन दास
महाप्रबंधक (कार्मिक)

एन. डी. पाण्डेय
कंपनी सचिव

पूजा वर्मा
राजभाषा अधिकारी

प्रिय पाठकगण !

मॉयल भारती का दसवां अंक आपके समक्ष प्रस्तुत है। आप सभी की प्रेरणा और सहयोग से यह पत्रिका उतरोत्तर उत्कृष्टता को प्राप्त कर रही है। नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की ओर से 'प्रथम पुरकार' प्राप्त होना इसी बात का प्रमाण है। अत एव संरक्षक, संपादक मंडल, सहयोगी रचनाकार एवं पाठकों सहित पत्रिका से जुड़े सभी पक्षों का साभार धन्यवाद।

अब तक के 9 अंकों की सफल यात्रा पूरी करते हुए यह अंक भी आपकी सेवा में प्रस्तुत है। पत्रिका की सामग्री में हर बार की तरह स्थायी सामग्री का समावेश तो है ही, नयी गतिविधियों एवं उपलब्धियों को भी सम्मिलित किया गया है। राजभाषा संबंधी सामग्री को भी शामिल करते हुए पत्रिका के इस अंक को तैयार किया गया है।

मॉयल भारती को इस मुकाम तक पहुँचाने में आप सभी का योगदान ही संजीवनी बना है। विश्वास है इस बार भी आपकी प्रतिक्रिया हमारा मार्गदर्शन करेगी। पत्रिका का ई-संस्करण कंपनी की वेबसाइट और राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय की वेबसाइट पर दर्शाया गया है। आने वाले पर्वो की हार्दिक शुभकामनाओं सहित साभार धन्यवाद।

जय भारत, जय राजभाषा !

पूजा वर्मा
संपादक-मॉयल भारती

अस्वीकरण

इस पत्रिका में छपे रचनाओं में व्यक्त विचार रचनाकार, लेखक, कवि के अपने व्यक्तिगत विचार है। इससे कार्यालय सहमत हो, यह आवश्यक नहीं।

अगर आप कुछ नहीं करोगे तो आपके पास कोई परिणाम नहीं होगा। महात्मा गांधी

मॉयल ने 22 जून 2023 को 61 वां स्थापना दिवस मनाया

स्थापना दिवस के अवसर पर बोलते हुए, इस्पात सचिव ने मॉयल समूह को बधाई दी और उन्हें उत्पादन बढ़ाने के लिए प्रोत्साहित किया। श्री अजित कुमार सक्सेना ने पिछले कुछ महीनों में कंपनी के शानदार प्रदर्शन पर प्रकाश डाला तथा विश्वास व्यक्त किया कि कंपनी ने वित्त वर्ष 2024 में रिकॉर्ड प्रदर्शन की योजना बनाई है। इस अवसर पर गणमान्य व्यक्तियों द्वारा कई पत्रिकाओं एवं मैनुअल का विमोचन भी किया गया। इस अवसर पर एक भव्य संगीत समारोह का आयोजन किया गया जिसमें स्टार कलाकार श्री पवनदीप रंजन और अरुणिता कांजीलाल (इंडियन आइडल 12 विजेता) और श्री गौरव शर्मा, स्टैंड-अप कॉमेडियन ने अपनी प्रस्तुति दी।

इस अवसर पर सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया और विभिन्न खदानो की विजेता टीमों ने भी इस अवसर पर प्रदर्शन किया । कार्यक्रम में सचिव इस्पात मंत्रालय एवं संयुक्त सचिव श्री संजय राव उपस्थित रहे ।

मॉयल के बारे में

मॉयल लिमिटेड भारत सरकार के इस्पात मंत्रालय के प्रशासनिक नियंत्रण के तहत एक अनुसूची-ए, मिनीरत्न श्रेणी-सीपीएसई है। मॉयल, देश में मैंगनीज अयस्क का सबसे बड़ा उत्पादक है, जो घरेलू उत्पादन में **45%** का योगदान देता है। यह महाराष्ट्र और मध्यप्रदेश राज्य में ग्यारह खदानें संचालित करता है । कंपनी का **2030** तक अपने उत्पादन को दोगुना कर **3.5** मिलियन टन से अधिक करने का महत्वाकांक्षी लक्ष्य है । मॉयल मध्य प्रदेश राज्य के अन्य क्षेत्रों के अलावा गुजरात,राजस्थान, छत्तीसगढ़ और ओडिशा राज्य में भी व्यापार के अवसर तलाश रहा है।

मॉयल की उपलब्धियाँ

उत्पादन – 16 लाख टन से अधिक
पिछले सर्वश्रेष्ठ से 21% से अधिक
बिक्री – 14 लाख टन से अधिक
तोडा 2007 का बहु–वर्षीय रिकार्ड

एक्सप्लोरेटरी कोर ड्रिलिंग : मॉयल ने वित्त वर्ष 24 की पहली तिमाही में अब तक की सर्वश्रेष्ठ एक्सप्लोरेटरी कोर ड्रिलिंग हासिल की है, जो कि पिछले वर्ष की इसी अवधि के दौरान 3.8 गुना है। 4907 मीटर की एक्सप्लोरेटरी कोर ड्रिलिंग की गई, जो कि पिछले वर्ष की अवधि के दौरान 2.63 गुना है। मॉयल शीन्स ब्रिगेट : मार्च 2023 से जुलाई 2023 तक बाजार पूंजीकरण में 1000 करोड़ रुपये की वृद्धि हुई।

पुरस्कार :

1. मॉयल की अवीघना टीम, बालाघाट खान और परख टीम, तिरोड़ी खान ने केस स्टडी प्रेजेंटेशन में "सुपरगोल्ड" अवार्ड और 34 वीं सीसीक्यूसी–23, नागपुर में कई प्रशंसा पत्र प्राप्त किये।
2. मॉयल के अध्यक्ष–सह–प्रबंध निदेशक को एशिया वन से ग्लोबल इंडियन ऑफ द ईयर अवार्ड से सम्मानित किया गया।
3. टॉप रैंकरों से बेस्ट इन डाइवर्सिटी एण्ड इनक्लूशन मैनेजमेंट अवॉर्ड।
4. मॉयल भारती पत्रिका और राजभाषा के सर्वश्रेष्ठ कार्यान्वयन हेतु विश्व हिंदी परिषद, नई दिल्ली द्वारा अंतर्राष्ट्रीय हिन्दी सम्मेलन में सम्मानित किया गया।
5. वैश्विक संचार सम्मेलन, पी आर सी आई पुरस्कारों में चार पुरस्कार। सामुदायिक विकास कार्यक्रम के लिए स्कॉच अवार्ड गोल्ड कैटेगरी।
6. मॉयल भारती पत्रिका–हिंदी नराकास नागपुर द्वारा पुरस्कार। सीएचआरओ एशिया से महाराष्ट्र सर्वश्रेष्ठ नियोक्ता ब्रांड पुरस्कार।

हिन्दी दिवस

हिन्दी दिवस क्यों मनाया जाता है?

> **1949 में भारत की संविधान सभा ने देश की आधिकारिक भाषा के रूप में हिंदी को अपनाया। वर्ष 1949 से प्रत्येक वर्ष 14 सितंबर को हिंदी दिवस मनाया जाता है। हिंदी दिवस को उस दिन को याद करने के लिए मनाया जाता है जिस दिन हिंदी हमारे देश की आधिकारिक भाषा बन गई।**

राजभाषा नियम 3 क्या है

अधिनियम की धारा 3 की उपधारा (3) में निर्दिष्ट सभी दस्तावेजों के लिए हिन्दी और अंग्रेजी दोनों का प्रयोग किया जाएगा और ऐसे दस्तावेजों पर हस्ताक्षर करने वाले व्यक्तियों का यह उत्तरदायित्व होगा कि वे यह सुनिश्चित कर लें कि ऐसी दस्तावेजें हिन्दी और अंग्रेजी दोनों ही में तैयार की जाती हैं, निष्पादित की जाती हैं और जारी की जाती हैं।

राजभाषा नियम 4 क्या है

क./रा. भा./अधिसूचना द्वारा सूचित किया गया है कि राजभाषानियम, 1976 के नियम 10(4) के अनुसार यदि केन्द्र सरकार के किसी कार्यालय में कार्यरत 80 प्रतिशत अधिकारियों एवं कर्मचारियों को हिंदी का कार्य साधक ज्ञान प्राप्त है तो उस कार्यालय को भारत के राजपत्र में अधिसूचित कराना अनिवार्य है।

क./रा. भा./अधिसूचना द्वारा सूचित किया गया है कि राजभाषानियम, 1976 के नियम 10(4) के अनुसार यदि केन्द्र सरकार के किसी कार्यालय में कार्यरत 80 प्रतिशत अधिकारियों एवं कर्मचारियों को हिंदी का कार्य साधक ज्ञान प्राप्त है तो उस कार्यालय को भारत के राजपत्र में अधिसूचित कराना अनिवार्य है।

धारा 3(3) के 14 दस्तावेज

1) सामान्य आदेश, कार्यालय आदेश कार्यालय टिप्पणी, ज्ञापन, परिपत्र
2) सूचना
3) विज्ञापन
4) निविदा ध्वनि निविदासूचना
5) अधिसूचना
6) प्रेस विज्ञप्ति/टिप्पणियाँ
7) संविदा
8) करार/अनुबंध
9) अनुज्ञप्ति
10) अनुज्ञाप
11) नियम/विनियम/अधिनियम
12) संकल्प
13) प्रशासनिक या अन्य प्रतिवेदन
14) संसद के एक या दोनों सदनों के समक्ष प्रस्तुत किए जाने वाले दस्तावेज

सुनो अधिक से अधिक, बोलो कम से कम. –शेक्सपीयर

हिंदी का मानक स्वरूप

हिंदी मे 'मानक' शब्द का प्रयोग अंग्रेजी शब्द के प्रतिशब्द के रूप में किया जाता है। भाषा का मानक रूप वस्तुत: भाषा के व्याकरण सम्मत शुद्ध, परिनिश्ठित, परिमार्जित रूप को कहा जाता है। इस मुकाम तक पहुँचने के लिए भाषा को कई प्रक्रियाओं से गुजरना पड़ता है। पहले स्तर पर भाषा का मूल रूप बोली होता है, इसका क्षेत्र सीमित होता है। इसकी कोई निर्धारित व्याकरणिक संरचना निश्चित नही होती और इसका प्रयोग प्राय: बातचीत में ही किया जाता है। अनेक सामाजिक, सांस्कृतिक कारणों से कई बार बोली का प्रयोग क्षेत्र विस्तृत होने लगता है और बोली लिपिबद्ध हो के साहित्य-सृजन का आधार बन जाती है। जब भाषा का लिखित रूप सामने आता है तो उसमें ध्वनि, शब्द, रूप, वाक्य आदि स्तरों पर एकरूपता के प्रयास किए जाने लगते है। एकरूपता के ये प्रयास ही भाषा को मानक रूप प्रदान करते है।

मानक हिंदी का स्वरूप- हिंदी के मानक स्वरूप को ध्वनि स्तर, शब्द स्तर, रूप स्तर एवं वाक्य स्तर पर देखा जा सकता है।

1. ध्वनि स्तर

क.-मानक हिंदी की ध्वनियों को दो वर्गो (स्वर एवं व्यंजन) में बाटा गया है। अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ए, ऐ, ओ, औ आदि स्वर है, तो क्, ख् से ह् तक व्यंजन है। सामान्यत: हिंदी व्यंजनों को स्वर के साथ ही (क्+अ = क) क, ख, ग - लिखा व बोला जाता है।

ख.- 'अ' और 'ह' ध्वनियाँ साथ आने पर 'अ' का 'ऐ' उच्चारण मानक माना जाता है, महल - मैहल, शहर - शैहर, कहता - कैहता।

ग.- हिंदी की ध्वनि व्यवस्था में स्वरों अर्थात मात्राओं के कारण तो अर्थ में अंतर आता ही है। (अवधि - काल, अवधी - बोली अथवा नाम) बलाघात, अनुतान, अनुनासिकता एवं दीर्घता (मात्रा) भी अर्थ निर्णय में सहायक होते है, जैसे -

बलाघात -आज कम से कम बोलूँगा। (आज अवश्य)
आज कम से कम बोलूँगा। (बहुत कम)
आज कम से कम बोलूँगा। (बोलूँगा अवश्य)

अनुतान - राम गया। (सामान्य)
राम गया! (आश्चर्य)
राम गया? (प्रश्न)

संहिता - (संगम+विवृत्ति)
कम + बल = कंबल, हो + ली = होली
पी + ली = पीली

अनुनासिकता - भाग - भांग, गोद - गोंद, उगली - उँगली
दीर्घता- पता - पत्ता, बला - बल्ला।

च. - 'ऐ', 'औ' क बाद 'य' अथवा 'व' आने पर इसका उच्चारण मूल स्वर के रूप में न होकर 'अय्', 'अव' के रूप में मानक माना जाता है, जैसे : नैया - नय्या, गैया - गय्या, कौवा - कउवा।

ङ.- 'ज्ञ' का उच्चारण संस्.त परंपरा के विद्वान 'ज्यँ' के रूप में करते है परंतु हिंदी में इसका मानक उच्चारण 'ग्य' है।

च. - हिंदी में प्रयुक्त होने वाले अंग्रेजी शब्दो में 'ऑ', 'ज', 'फ' ध्वनियों का यही मानक उच्चारण माना जाता है - बॉल,कॉफी,ज़ू, फ़ाइल आदि।

छ. - हिंदी में प्रयुक्त होने वाले अरबी-फारसी शब्दों में क, ख, ग, ज, फ का यह उच्चारण मानक माना जाता है - कैद, खाला, गम, जरूर, फालतू। (परंतु हिंदी का प्रयोग करने वाली युवा पीढ़ी के उच्चारण में क, ग का प्रयोग लगभग समाप्त हो गया है।

2. शब्द स्तर

क. - हिंदी में मुख्यत चार स्त्रोतों से शब्द आए है:- तत्सम - कर्म, विद्या, ज्ञान, क्षेत्र, पुश्प, मृग आदि। तत्भव - हाथ (हस्त), काम (कर्म), घर (गृह) आदि। आगत - इंजन, मोटर, प्रेस, पेस्ट्री, चपरासी, हमला, मकान। अज्ञात व्युत्पति (देषज) शब्द - कबड्डी, चूहा, पेड़, टट्टू आदि।

ख.- हिंदी में दो लिंग (स्त्रीलिंग, पुल्लिंग) और दो वचन (एकवचन, बहुवचन) है।

ग.- जिन शब्दों के एकाधिक रूप प्रचलित है, उनमें से एक का प्रयोग मानक है जैसे: गरदन-गर्दन, बिलकुल-बिल्कुल, दुकान-दूकान,सरदी- सर्दी। इनमें से पहले रूप को प्राथमिकता दी जाती है।

ङ.- हिंदी में शब्दों का निर्माण उपसर्ग, प्रत्यय, संधि, दविरूक्ति (चलते -चलते), पुनरुक्ति (माल-वाल, रोटी-बोटी) दवारा होता है।

च.- मानक हिंदी में कारकों के लिए विभक्ति चिह्न निश्चित है, जो संज्ञा या सर्वनाम पदों के बाद परसर्ग के रूप में प्रयुक्त होते है; जैसे राम ने, उसने, भाई के लिए, तुमका (तुम्हे)।

1. ध्वनि स्तर

क.–मानक हिंदी की ध्वनियों को दो वर्गो (स्वर एवं व्यजंन) में बाटा गया है। अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ए, ऐ, ओ, औ आदि स्वर है, तो क्, ख् से ह् तक व्यजंन है। सामान्यत: हिंदी व्यंजनों को स्वर के साथ ही (क्+अ = क) क, ख, ग – लिखा व बोला जाता है।

ख.– 'अ' और 'ह' ध्वनियाँ साथ आने पर 'अ' का 'ऐ' उच्चारण मानक माना जाता है, महल – मैहल, शहर – शैहर, कहता – कैहता।

ग.– हिंदी की ध्वनि व्यवस्था में स्वरों अर्थात मात्राओं के कारण तो अर्थ में अंतर आता ही है। (अवधि – काल, अवधी – बोली अथवा नाम) बलाघात, अनुतान, अनुनासिकता एवं दीर्घता (मात्रा) भी अर्थ निर्णय में सहायक होते है, जैसे –

बलाघात –आज कम से कम बोलूँगा। (आज अवश्य)
आज कम से कम बोलूँगा। (बहुत कम)
आज कम से कम बोलूँगा। (बोलूँगा अवश्य)

अनुतान – राम गया। (सामान्य)
राम गया! (आश्चर्य)
राम गया? (प्रश्न)

संहिता – (संगम+विवृत्ति)
कम + बल = कंबल, हो + ली = होली
पी + ली = पीली

अनुनासिकता – भाग – भांग, गोद – गोंद, उगली – उँगली
दीर्घता– पता – पत्ता, बला – बल्ला।

च. – 'ऐ', 'औ' क बाद 'य' अथवा 'व' आने पर इसका उच्चारण मूल स्वर के रूप में न होकर 'अय्', 'अव' के रूप में मानक माना जाता है, जैसे : नैया – नय्या, गैया – गय्या, कौवा – कउवा।

ड.– 'ज्ञ' का उच्चारण संस्.त परंपरा के विद्वान 'ज्यँ' के रूप में करते है परंतु हिंदी में इसका मानक उच्चारण 'ग्य' है।

च.– हिंदी में प्रयुक्त होने वाले अंग्रेजी शब्दो में 'ऑ', 'ज़', 'फ़' ध्वनियों का यही मानक उच्चारण माना जाता है – बॉल,कॉफी,ज़ू, फ़ाइल आदि।

छ.– हिंदी में प्रयुक्त होने वाले अरबी–फारसी शब्दों में क, ख, ग, ज, फ का यह उच्चारण मानक माना जाता है - क़ैद, ख़ाला, ग़म, ज़रूर, फ़ालतू। (परंतु हिंदी का प्रयोग करने वाली युवा पीढ़ी के उच्चारण में क, ग का प्रयोग लगभग समाप्त हो गया है।

2. शब्द स्तर

क.– हिंदी में मुख्यत चार स्त्रोतों से शब्द आए है:– तत्सम – कर्म, विद्या, ज्ञान, क्षेत्र, पुश्प, मृग आदि। तत्भव – हाथ (हस्त), काम (कर्म), घर (गृह) आदि। आगत – इंजन, मोटर, प्रेस, पेस्ट्री, चपरासी, हमला, मकान। अज्ञात व्युत्पति (देषज) शब्द – कबड्डी, चूहा, पेड़, टट्टू आदि।

ख.– हिंदी में दो लिंग (स्त्रीलिंग, पुल्लिंग) और दो वचन (एकवचन, बहुवचन) है।

ग.– जिन शब्दों के एकाधिक रूप प्रचलित है, उनमें से एक का प्रयोग मानक है जैसे: गरदन–गर्दन, बिलकुल–बिल्कुल, दुकान–दूकान,सरदी– सर्दी। इनमें से पहले रूप को प्राथमिकता दी जाती है।

ड.– हिंदी में शब्दों का निर्माण उपसर्ग, प्रत्यय, संधि, द्विरूक्ति (चलते –चलते), पुनरुक्ति (माल–वाल, रोटी–बोटी) द्वारा होता है।

1. स्वर या मात्रा संबंधी

अशुद्ध शब्द	शुद्ध शब्द	अशुद्ध शब्द	शुद्ध शब्द
अक्षामी	आगामी	झौपड़ी	झोंपड़ी
अतिथी	अतिथि	मिठायी	मिठाई
हानी	हानि	गुरु	गुरु
प्रदर्शिनी	प्रदर्शनी	जादु	जादू
गृहणी	गृहिणी	पूछिये	पूछिए

2.व्यंजन संबंधी अशुद्धियां

अशुद्ध शब्द	शुद्ध शब्द	अशुद्ध शब्द	शुद्ध शब्द
बूढ़ा	बूढ़ा	आर्शिवाद	आर्शीवाद
ढ़ोल	ढोल	दवाब	दबाव
चपड़ासी	चपरासी	नर्क	नरक
अमावश्या	अमावस्या	गोश्टी	गोष्ठी
पिंजड़ा	पिंजरा	सृश्ठि	सृष्ठि

3.लिपि संबंधी

अशुद्ध शब्द	शुद्ध शब्द
शानत	शांत
शुरु	शुरू
बोटल	बोतल
सन्यास	संन्यास

4. वचन एवं लिंग संबंधी (वाक्य स्तर पर)

अशुद्ध शब्द	शुद्ध शब्द
प्रयाग में तीन नदी मिलती है।	प्रयाग में तीन नदियाँ मिलती है।
मीरा प्रसिद्ध कवि थी।	मीरा प्रसिद्ध कवयित्री थी।
अधिकारी के पास अनेकों फाइल हैं।	अधिकारी के पास अनेक फाइलें है।

5. वचन संबंधी

अशुद्ध शब्द	शुद्ध शब्द
बंबई में पॉच गिरफतारी हुई।	मुंबई में पाँच गिरफतारियाँ हुई।
जैन साहित्य प्राकृत में लिखे गए है।	जैन साहित्य प्राकृत में लिखा गया है।
चार वर्णो का नाम बताओ।	चार वर्णो के नाम बताओ।

6. विभक्ति संबंधी

अशुद्ध शब्द	शुद्ध शब्द
हम आप से कह रहे थे.	हमने आप से कहा था.
मैं उन्हे नही पहचाना.	मैंने उन्हें नहीं पहचाना.
मैंने वहाँ जाना है.	मुझे वहाँ जाना है.
वह अपना भाग्य कोस रहा है.वह	अपने भाग्य को कोस रहा है.
जनता के अंदर अविश्वास पैदा हो गया.	जनता में अविश्वास पैदा हो गया.

7. शिरोरेखा संबंधी

अशुद्ध शब्द	शुद्ध शब्द
पीली भंग	पी ली भंग
गंगा जल	गंगा का जल
कहो तो ला दू	कहो तो ला दूँ

8. पदीम संबंधी

अशुद्ध शब्द	शुद्ध शब्द
मुझे एक चाय का कप दे दो.	मुझे चाय का एक कप दे दो.
केवल यहाँ दो आदमी है.	यहाँ केवल दो आदमी है.
उसने बचे को काटकर सेब खिलाया.	उसने सेब काटकर बचे को खिलाया.

9. विशेषण और क्रिया विशेषण संबंधी

अशुद्ध शब्द	शुद्ध शब्द
राम की बुद्धि बड़ी तेज है.	राम की बुद्धि बहुत तेज हैं.
तुम सबसे सुंदरतम हो.	तुम सब से सुंदर हो.
निदेशक सायंकाल के समय आएंगे.	निदेशक सायंकाल आएंगे.

10. क्रिया संबंधी

अशुद्ध शब्द	शुद्ध शब्द
मुमताज विलाप करके रोने लगी.	मुमताज विलाप करने लगी.
आप टाइप करोगे.	आप टाइप करेंगे.
क्या आप भोजन किए है.	क्या आपने भोजन किया है.

11. शब्दों की आवृत्ति संबंधी

अशुद्ध शब्द	शुद्ध शब्द
सारे दफ्तर भर में फाइल ढूंढ ली.	सारे दफ्तर में फाइल ढूँढ ली.
उपनिदेशक दौरे से वापस लौट आए है.	उपनिदेशक दौरे से लौट आए है.
कृपया छुट्टी स्वीकृत करने की कृपा करें.	कृपया छुट्टी स्वीकृत करें.

हिंदी है पहचान हमारी

सुंदर सरल हिंदी भाषा का
महत्व हमने है जाना,
पुरातन काल में प्रचलित
हिंदी भाषा को,
हमने प्रेम से है अपना माना ।

संस्कृत है इस भाषा की जननी
अमृत है इस भाषा की दानी,
करो गर्व अपनी राष्ट्रभाषा पर
हिंदी भाषा में ही सजी
हर साहित्य की कहानी ।

पढ़ूं हिंदी, लिखूं हिंदी, हर कलम में
सजोकर हिंदी की स्याही,
हिंदुस्तान की आवाज है हिंदी,
हर भारतीय की शक्ति की यह गवाही ।

अभिनंदन है, सम्मान है,
हमारी मातृभाषा का हमें अभिमान है,
परिचय यही, इतिहास यहीं कि
भारत की यह भाषा पहचान है।

उज्वला वानखेडे
वरिष्ठ सहायक (का.एवं प्र.)

हमारे मुँह की रोटी कोई छीन ले, तो उसके गले में उंगली डालकर निकालना हमारा धर्म हो जाता है। -प्रेमचंद

टिप्पणीयाँ

A brief note is placed below	संक्षिप्त नोट नीचे रखा है।
Accordingly it has been decided	तदनुसार यह निर्णय लिया गया।
Action may be taken as proposed	यथा प्रस्तावित कार्रवाई की जाए।
Approved as per remarks in the margin	हाशिये की टिप्पणी के अनुसार अनुमोदित।
Await reply	उत्तर की प्रतिक्षा की जाए।
Brought forward	आगे लाया गया।
Circulate and then file	परिचालित कर फाईल करे।
Contravenes the provisions of	के उपबंधो का उल्लंघन करता है ।
Discrepancy may be reconciled	विसंगति का समाधान किया जाए।
Deemed to suspend	निलंबित समझा जाए।
Delay in submitting the case is regretted	मामले के प्रस्तुत करने में हुए विलंब के लिए खेद है।
Early action in the matter is requested	अनुरोध है कि इस मामले में शीघ्र कार्रवाई करें।
Early orders are solicited	शीघ्र आदेश देने का अनुग्रह करें।
Expedite action	कार्रवाई शीघ्र करें।
Explanation may be called for	जवाब तलब किया जाए।
For precedent, please see	पूर्व उदाहरण के लिए कृपया देखें।
Further orders will follow	आगे और आदेश भेजे जाएगें।
For further action	आगे की कार्रवाई के लिए।
I fully agree with the office note	मैं कार्यालय की टिप्पणी से पूर्णतया सहमत हूँ।
Have been directed to inform You/request you	मुझे निदेश हुआ है कि मैं आपको सूचित करु। आपसे निवेदन करु।
His request may be acceded to	उसका निवेदन स्वीकार किया जाए ।
Is adjourned sine die	अनिश्चितकाल के लिए स्थगित।
Implication of rule implied, it is	नियम का आशय यह है।
Inter-alia	अन्य बातों के साथ-साथ।
Office to note and comply	कार्यालय ध्यान दे और पालन करे।
Please comply before due date	कृपया नियत समय से पहले इसका पालन किया जाए ।
Please discuss with relevant papers	संगत कागज-पत्रों के साथ चर्चा करें।
Reinstated in service	नौकरी बहाल की जाए।
Shall not be questioned on any ground	किसी भी आधार पर आपत्ति नहीं की जाएगी।
Such action as may be deemed necessary	ऐसी कार्रवाई जो आवश्यक समझी जाए।
The file in question is not traceable	संदर्भित फाइल नही मिल रही है ।
To the best of knowledge and belief	जानकारी और विश्वास के अनुसार।
With regards	सादर।
Your request can not be acceded to	आपका अनुरोध स्वीकार नही किया जा सकता।

बहादुर वह नहीं है जो भयभीत नहीं होता, बल्कि वह है जो इस भय को परास्त करता है. –नेल्सन मंडेला

दैनिक कार्य में ध्यान देने योग्य बातें

1. प्रतिदिन कार्यालयीन पत्राचार में से एक कार्यालय टिप्पणी अथवा एक मूल पत्र हिंदी मे बनाएँ ।
2. हिंदी और अंगेजी मे प्राप्त पत्रों के उत्तर हिंदी में भेजने का प्रयास करें ।
3. उपस्थिति पंजिका में सभी कर्मचारियों के नाम पदनाम तथा माह के नाम आदि हिंदी में ही लिखें ।
4. धारा 3(3) से संबधित कागजात जैसे कार्यालय आदेश अधिसूचनाएं आदि अनिवार्य रुप से हिंदी में बनाने का प्रयास करें ।
5. कार्यालय के सभी फाइलों रजिस्टरों एवं डायरियों को स्वच्छ कवर लगाकर उन पर द्विभाषा में शीर्षक लिखें ।
6. कार्यालय से भेजे जाने वाले रिपोर्टो के कवर पत्र (प्रावरण पत्र) हिंदी में ही लिखें ।
7. प्रतिदिन सूचना फलक पर एक सुविचार जन्मदिन की बधाई आदि हिन्दी में लिखने हेतु प्रेरित करें ।
8. रजिस्टरों तथा डायरियों में प्रविष्टियाँ हिंदी में ही करें ।
9. डाक बुक में प्रविष्ठियाँ हिंदी में ही करें या अधीनस्थों को प्रेरित करें ।
10. छुटटी के आवेदन सभी दौरा कार्यक्रम यात्रा भत्ता बिल आदि हिंदी में प्रस्तुत करें तथा अधीनस्थों को प्रेरित करें ।
11. कार्यालय में जारी सूचनाएं आदि हिंदी में ही जारी करें ।
12. विभिन्न कार्य के लिए आवेदन या व्यक्तिगत अभ्यावेदन हिंदी में ही लिखें ।
13. कार्यालय से भेजे जाने वाले लिफाफों पर पते हिंदी में लिखें ।
14. अपने हस्ताक्षर हिंदी में ही करें ताकि अन्य कर्मचारी प्रेरणा ले सके ।
15. ईमेल व्हास्टसएप टेलिग्राम टविटर आदि सोशल मीडिया पर कार्यालयीन संदेश हिंदी में ही भेजें ।

आइए हिंदी के प्रचार प्रसार तथा राष्ट्र के विकास में सहयोगी वने.

जो मनुष्य इसी जन्म में मुक्ति प्राप्त करना चाहता है, उसे एक ही जन्म में हजारों वर्षों का काम करना पड़ता है। - स्वामी विवेकानंद

टिप्पणी लेखन
(Noting)

किसी भी विचारधीन पत्र या आवेदन पर उसके निष्पादन (Disposal) को सरल बनाने के लिए जो टिप्पणियाँ सरकारी कार्यालयों में लिपकों, सहायकों तुथा कार्यालय अधीक्षकों द्वारा लिखी जाती है, उन्हें टिप्पण-लेखन कहते हैं।

टिप्पणी सरकारी कार्यालयों में कार्य सम्पादन का एक माध्यम है। कार्यालयों में आए हुए विचारधीन पत्रों को निपटाने के लिए लिपिक अथवा अधिकारियों के द्वारा पूर्व सन्दर्भ, वर्तमान तथ्य और आवश्यक सुझावों का उल्लेख करते हुए अधिकारी के अन्तिम निर्णय लेने की दिशा में दी गई अभ्युक्तियाँ टिप्पण कहलाती है।
सरल शब्दों में– ''किसी भी विचारधीन पत्र के निस्तारण को सुगम और सरल बनाने के लिए जो टिप्पणी लिखी जाती है, वह टिप्पण कहलाती है।''

मन्त्री, प्रधानमन्त्री अथवा राष्ट्रपति के द्वारा लिखी गई टिप्पणी को 'मिनट' कहते हैं। टिप्पण का मुख्य उद्देश्य विचारधीन पत्रों से सम्बन्धित सभी बातों को इस प्रकार प्रस्तुत कर देना है कि उसकी बातें स्पष्ट हो जाएँ और अधिकारी को निर्णय लेने में कठिनाई न हो।
जब किसी पत्र के निस्तारण के लिए संक्षित्त टिप्पण करना होता है तो उसे मूल पत्र के हाशिये पर लिख दिया जाता है।
संक्षिप्त टिप्पणों के लिए निम्नलिखित प्रकार के वाक्य प्रस्तुत किए जाते हैं।

1. देख लिया।
2. मैं सहमत हूँ।
3. आदेशार्थ प्रस्तुत है।
4. अग्रसर एवं संस्तुत।
5. आलेख अनुमोदनार्थ प्रस्तुत है।
6. आवेदन स्वीकार कर लिया जाए।
7. मुझे कोई आपत्ति नहीं हैं।
8. श्री........ कृपया अवलोकन करें।
9. आवेदन अस्वीकृत।
10. अवकाश स्वीकृत।
11. कार्यालय की टिप्पणी से सहमत हूँ।
    आदेश जारी कर दिया जाए।
12. यह मामला पुलिस के हवाले किया जाए।
13. इस सम्बन्ध में पृष्ठ ...... पर दी गई टिप्पणी देखें।
14. इस मामले का शीघ्र निपटारा कीजिए।
15. सभी प्रधानाचार्य को सूचित किया जाए।
16. वित्त मन्त्रालय की भी सलाह ले ली जाए।
17. अमुक कर्मचारी के विरुद्ध अनुशासनात्मक कार्यवाही की जाए।
18. अवकाश अस्वीकृति।
19. वित्त मन्त्रालय की भी सलाह ले ली जाए।

इन टिप्पणों में तीन बातें रहती हैं –

(1) उस पत्र से पूर्व के पत्र आदि का सारांश
(2) जिस प्रश्न पर निर्णय किया जाता है, उसका विवरण या विश्लेषण और
(3) उस सम्बन्ध में क्या कार्रवाई की जाय, इस विषय में सुझाव और क्या आदेश दिये जायँ, इस विषय में भी सुझावों का उल्लेख।

अभिप्राय यह है कि टिप्पण-लेखन में विचारधीन प्रश्न के बारे में वे सब बातें लिखी जाती हैं, जिनसे उस प्रश्न के सम्बन्ध में निर्णय करने और आदेश देने में सुविधा होती है। उस विचारधीन प्रश्न का पुराना इतिहास क्या है ? उस सम्बन्ध में नियम क्या है ? सरकारी नीति क्या है ? इत्यादि सारी बातों का उल्लेख कर अन्त में यह सुझाव देना चाहिए कि इस सम्बन्ध में अमुक प्रकार का निर्णय करना उचित होगा। इसके बाद वह पत्र निर्णय करनेवाले उच्च अधिकारी के सामने रखा जायेगा। ऊपर दिये गये निर्देशों के साथ लिखे गये टिप्पणी को पढ़कर उस अधिकारी का निर्णय करने में आसानी होगी।
टिप्पणी के सम्बन्ध में कुछ विशिष्ठ बातें इस प्रकार हैं

(1) टिप्पणी बहुत लम्बा या विस्तृत नहीं होना चाहिए। उसे यथा सम्भव संक्षिप्त और सुस्पष्ट होना चाहिए।
(2) कोई भी टिप्पणी मूलपत्र (original letter) पर नहीं लिखा जाना चाहिए। उस के लिए कोई अन्य कागज या बफ- शीट का प्रयोग करना चाहिए।
(3) टिप्पणी में यदि किसी पत्र का खण्डन करना हो, तो वह बहुत ही शिष्ट और संयत भाषा में किया जाना चाहिए और किसी भी दशा में किसी प्रकार का व्यक्तिगत आरोप या आक्षेप नहीं किया जाना चाहिए।

(4) यदि एक ही मामले में कई बातों पर अलग-अलग आदेश लिए जाने की आवश्यकता हो तो उनमें से हर बात पर अलग-अलग टिप्पण लिखना चाहिए ।

(5) टिप्पण लिखने के बाद लिपिक या सहायक को नीचे बाई ओर अपना हस्ताक्षर करना चाहिए । दाई ओर का स्थान उच्च अधिकारियों के हस्ताक्षर के लिए छोड़ देना चाहिए ।

(6) कार्यालय की ओर से लिखे जा रहे टिप्पण में उन सभी बातों या तथ्यों का सही-सही उल्लेख होना चाहिए जो उस पत्रावली के निस्तारण के लिए आवश्यक हों।

(7) यथा सम्भव एक विषय पर कार्यालय की ओर से एक ही टिप्पणी लिखा जाना चाहिए।

(8) जहाँ तक सम्भव हो, टिप्पण इस ढंग से लिखा जाना चाहिए कि पत्रावली में पत्र जिस क्रम से लगे हों, टिप्पणी में भी उनका वही क्रम रहे।

(9) टिप्पण सदा स्याही से लिखे या टंकित होने चाहिए ।

(10) लिपिक, सहायक और कार्यालय अधीक्षक को कागज की बाई ओर अपने नाम के प्रथमाक्षरों का ही प्रयोग करना चाहिए । उच्च अधिकारी को अपना पूरा नाम लिखना पड़ता है।

(11) टिप्पणीयों में ऐसे शब्दों का प्रयोग कभी नहीं करना चाहिए, जिनके अर्थ समझने में कठिनाई हो।

❑❑❑

बधाई

माननीय कलेक्टर महोदय, बालाघाट (म.प्र.) द्वारा कान्हा राष्ट्रीय पार्क में प्रादेशिक स्तर पर मेराथन दौड़ का आयोजन किया गया । इस प्रतियोगिता में बालाघाट खान से **श्री सुरेन्द्र कलिराम काशी** प्रतिभागी के रूप में सम्मिलित हुये । इस प्रतियोगिता में उन्होने प्रथम स्थान प्राप्त कर मॉयल लिमिटेड का नाम रोशन किया। श्री सुरेन्द्र काशीजी, मॉयल लिमिटेड में पी.आर. कामगार के रूप मे भर्ती हुये एवं वर्तमान में मुख्य सुरक्षा सैनिक, मॉयल लिमिटेड, बालाघाट खान पर कार्यरत् है । 52 वर्षीय सुरेन्द्र काशीजी इसके अलावा अन्य खेलो जैसे खो-खो, कबड्डी, वॉली बाल, फुटबाल एवं अन्य खेलों में भी विशेष रुचि रखते हैं ।

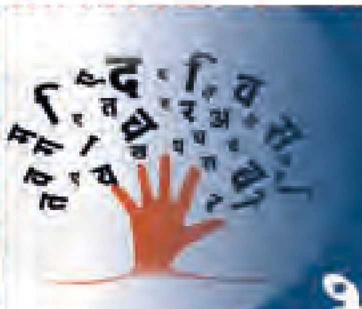

भाषायी सद्भावना

भाषायी सद्भावना
हिंदी भाषा,
अमृत वर्षा करती है ।

सत और प्रकाश की ओर चले,
साम गीतियाँ स्तुति
करती है।

प्रभुचंदन कीर्तिन स्वर लहरी,
मंगल परिवेश बनाती है ।

माता-पिता और गुरू के चरणों में,
श्रद्धा भाव जगाती है।

मानवता के कल्याण से भरे,
कबीरा रहीम की वाणी है।
पर्व और त्योहार से भरे,
ऋतुओं की छटा दिखाती है ।

'अ' आखर पढ़े विद्वान बने,
देवनागरी लिपि कहलाती है ।

एकता और अखण्डता से,
सद्भावना दीप जलाती है ।

सद्भावना दीप जलाती है ।

स्वरचित
पी.के. मिश्रा
उप महाप्रबंधक (रसायन)

हिंदी अंग्रेजी शब्द

Abatement	समाप्ति घटाव, न्यूनीकरण	Joint committee meeting	संयुक्त समिति बैठक
Abeyance	आस्थगन	Keep with file	फाईल मे रखिये
Abide by	बंद करना, पाबंदी करना, पालन करना, मानना	Key-industry	मूलभूत उद्योग
Abide by rules	पद की समाप्ति	Knowledge	ज्ञान, परिचय, जानकारी
Above noted	उपर लिखा हुआ, उपर लिखित	Lacking	कमी, अभाव
Back wages payment of	पूर्व प्रभावी वेतन का भुगतान	Lacking quorum	कोरम का अभाव
Backward Classes	पिछड़ा वर्ग	Labour dispute	श्रमिक विवाद
Behalf of	ओर से	Labour strength	श्रम शक्ति
Beleaguer	घेरा डालना	Laid Down	निर्धारित, निर्दिष्ट, दिए हुए
Below mentioned	निम्नलिखित	Mandays	मानव दिवस
Call upon to show cause	कारण बताने के लिये आदेश देना	Manpower	मानव शक्ति
Candidate	उम्मीदवार	Maintenance Allowance	रखरखाव और मरम्मत भत्ता
Cadre	संवर्ग, मूलरचना	Major	वयस्क, प्रधान
Casual Leave	आकस्मिक अवकाश	Majority	वयस्कता, बहुमत, बहुसंख्य
Casual Vacancies	आकस्मिक रिक्तियां	Natural Justice,	नैसर्गिक न्याय
Daily Allowance	दैनिक भत्ता	Principles of Nature of the claim	दावे की प्रकृति का सिध्दांत
Dead Stock	बिना बिका हुआ माल	Necessary action	आवश्यक कार्यवाही
Deal	मंहगाई भत्ता	Negligence	उपेक्षा, असावधानी, लापरवाही
Dealing Clerk	संबंधित लिपिक	Negotiation	समझौते की बातचीत
Economical	व्यवहार	Observe	देय,
Ear /mark	चिन्हित करें	Objection	आपत्ति
Dearness Allowance	मितव्ययी, कम खर्चीला	Occasional check	दायित्व, अनुग्रह, आभार, कर्तव्य
Editorial	सम्पादकीय	Obligation	अवलोकन करना, पालन करना
Educational Qualification	शैक्षणिक योग्यता	Occupier	कब्जाधारी

मनुष्य को चाहिए कि वह परिस्थितियों से लड़े, एक स्वप्न टूटे, तो दूसरा गढ़े। – अटल बिहारी वाजपेयी

हिंदी अंग्रेजी शब्द

Effective	प्रभावकारी, प्रभावी	Parity	समानता
Fair	अच्छा	Participation	योगदान
Fabricate	निर्माण	Payable, gratuity	देय, उपदान
Face value	अंकित मूल्य	Pay and allowance	वेतन और भत्ता
Facilitate	सुविधा देना	Payable revenue	देय भूराजस्व
Failure report	असफलता रिपोर्ट	Qualification	योग्यता, अर्हता
Games	खेल कूद	Quality	गुणवत्ता प्रकार
Gazette Extraordinary	असाधारण राजपत्र	Quantity	परिमाण, मात्रा
Gazetted Officers	राजपत्रित अधिकारी	Quarterly	तिमाही
General Administration	सामान्य प्रशासन	Quarterly Report	तिमाही विवरण
General Election	सामान्य निर्वाचन	Rate	भाव, दर
Habitual defaulter	आभ्यासिक उपेक्षा	Raw material	कच्चा माल
Half yearly	अर्ध वार्षिक	Reaction	प्रतिक्रिया
Half yearly balance	छः माही शेष	Reading room	वाचनालय
Halt	पड़ाव, रुकने का भत्ता	Readmission	पुनः प्रवेश
Halting Allowance	विराम भत्ता, रुकने का भत्ता	Sabotage	तोड़फोड़
I am directed to	मुझे निदेश हुआ है कि	Sack	निकाल देना
I am directed to enquire	मुझे जांच करने का निदेश हुआ हैं	Safe	सुरक्षित
I concur in the proposed	मैं इस प्रस्ताव पर अपनी सहमति देता हूँ	Salary certificate	वेतन प्रमाणपत्र
Identification Card	परिचय पत्र	Salary fixation	वेतन निर्धारण
Inform all concerned	सभी संबंधित व्यक्तियों को सूचित करें	Tabled questions	विचारार्थ प्रस्तुत प्रश्न
Job Work	फुटकर काम, क्रय-विक्रय करना	Table of contents	विषय सूची
Joining Report	कार्यग्रहण सूचना	Tabulate	सारिणीबद्ध
Joining time, extension of	कार्यालय समय, बढ़ाना	Tact and ability	युक्ति और योग्यता
Joint and several	संयुक्त या अलग-अलग	Take care of	सुरक्षित

अशुध्द एवं शुध्द शब्द

अशुद्ध शब्द	शुद्ध शब्द	अशुद्ध शब्द	शुद्ध शब्द
अंत्येष्ठि	अंत्येष्टि	अकस्मात	अकस्मात्
अगम्य	अक्षम्य	अधिशाशी	अधिशासी
अनुदित	अनूदित	अंतकरण	अंत:करण
अभिश्ट	अभीष्ट	अपरान्ह	अपराह्न
अनुशरण	अनुसरण	अँकुर	अंकुर
अधगति	अधोगति	बिमारी	बीमारी
दिवाली	दीवाली	महाबलि	महाबली
निसंदेह	नि:सदेह	यानि	यानी
नुपुर	नूपुर	उज्वल	उज्ज्वल
उलंघन	उल्लंघन	उश्मा	ऊष्मा
एच्छिक	ऐच्छिक	सुई	सूई
त्यौहार	त्योहार	झौंपड़ी	झोंपड़ी
संग्रहीत	संगृहीत	कनिश्ट	कनिष्ठ
करूणा	करुणा	कलस	कलश
कवियत्री	कवयित्री	कुमुदनी	कुमुदिनी
कुतुहल	कौतूहल	कैलाश	कैलास
खंबा	खंभा	गूंज	गूँज
गांधी	गाँधी	चाहिये	चाहिए
चिंगारी	चिनगारी	छठवाँ	छठा
जुखाम	जुकाम	जागृत	जाग्रत
झांसी	झाँसी	डमरु	डमरू
बूढा	बूढ़ा	मेंढक	मेढक
तदानुकूल	तदनुकूल	तदोपरांत	तदुपरांत
त्रिमासिक	त्रैमासिक	तस्तरी	तश्तरी
दयालू	दयालु	दंपति	दंपती
दाँया	दायाँ	दीयासलाई	दियासलाई
द्वारिका	द्वारका	दांत	दाँत
नाँव	नाव	नर्क	नरक
नयी	नई	फिटकरी	फिटकिरी
निरोग	नीरोग	निस्कलंक	निष्कलंक
परिप्रेक्ष	परिप्रेक्ष्य	भूगौलिक	भौगोलिक
परिवेक्षण	पर्यवेक्षण	परिषद	परिषद्
पुरूस्कार	पुरस्कार	पूज्यनीय	पूजनीय
प्रदर्शिनी	प्रदर्शनी	प्रत्यार्पण	प्रत्यर्पण
बहु	बहू	बाल्मीकी	वाल्मीकि
भगीरथी	भागीरथी	भाग्यवान	भाग्यवान्
मंत्रीमंडल	मंत्रिमंडल	मनोकामना	मनो:कामना

चिंता से चतुराई घटे, दुःख से घटे शरीर। पाप से लक्ष्मी घटे कह गये दास कबीर। - कबीरदास

हिंदी दिवस एवं तृतीय अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन 2023

माननीय गृह एवं सहकारिता मंत्री श्री अमित शाह जी की अध्यक्षता में दिनांक 14-15 सितम्बर 2023 को श्री शिव छत्रपति स्पोर्ट्स काम्प्लेक्स, बालेवाड़ी, पुणे (महाराष्ट्र) में हिंदी दिवस एवं तृतीय अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन का संयुक्त आयोजन, अत्यन्त भव्य एवं गरिमामयी स्वरूप में किया गया।

इस कार्यक्रम में देशभर से आये हिन्दी सेवियों ने प्रतिभागिता की। साथ ही नराकास से जुड़े सभी वरिष्ठ अधिकारी, हिंदी अधिकारी एवं सदस्य सचिव भी उपस्थित रहें। इसी तार तम्य में हिंदी पखवाड़ा का आयोजन दिनांक 14 सितम्बर 2023 से 29 सितम्बर 2023 के मध्य सभी मंत्रालय/विभाग/संबद्ध एवं अधीनस्थ कार्यालय/ बैंक/ उपक्रम/ निगम/ बोर्ड में आयोजन किया गया। हिंदी भाषा को प्रोत्साहित करने हेतु पखवाड़ा के दौरान विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया।

साथ ही सभी मंत्रालयो/विभागों के कार्मिकों को मध्य राजभाषा से संबंधित सवैधानिक प्रावधानों, राजभाषा अधिनियम, 1963, राजभाषा नियम, 1976, राजभाषा संकल्प, 1968 और समय-समय पर राजभाषा विभाग द्वारा राजभाषा नीति से संबंधित जारी दिशा-निर्देशों से अवगत कराया गया।

विफलता तभी होती है जब हम अपने आदर्शों, उद्देश्यों और सिद्धांतों को भूल जाते हैं। – पं. जवाहर लाल नेहरू

मॉयल लिमिटेड में 14 सितम्बर– 29 सितम्बर 2023 तक मनाया गया

हिंदी पखवाड़ा

मॉयल लिमिटेड में दिनांक 14 सितम्बर से 29 सितम्बर 2023 के मध्य हिंदी पखवाड़ा का आयोजन किया गया । गृहमंत्रालय द्वारा दिनांक 14 सितम्बर को हिन्दी पखवाड़ा का शुभारंभ पुणे मे किया गया । जिसमे मॉयल लिमिटेड के अधिकारी एवं कर्मचारी ने सहभागिता की । दिनांक 16 सितम्बर 2023 से 29 सितम्बर 2023 तक मॉयल लिमिटेड, मुख्यालय नागपुर में हिंदी पखवाड़ा के दौरान विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया जैसे पंचलाइन, निबंध, प्रश्नोत्तरी, स्लोगन, लेख एवं नोटिंग ड्राटिंग प्रतियोगिता आदि।

विश्व हिंदी परिषद नई दिल्ली द्वारा दिनांक 20-21 सितम्बर 2023 को विश्व अंतर्राष्ट्रीय हिंदी सम्मेलन का आयोजन किया गया । इस कार्यक्रम में मॉयल लिमिटेड की पत्रिका मॉयल भारती एवं राजभाषा नीति के श्रेष्ठ कार्यान्वयन हेतु पुरस्कार प्राप्त हुआ।

इसी संदर्भ में दिनांक 26 सितम्बर 2023 कृत्रिम मेधा एवं हिंदी' विषय पर एक दिवसीय कार्यशाला का भी आयोजन किया गया । साथ ही दिनांक 27 सितम्बर 2023 को मॉयल भवन मे 'हास्य कवि सम्मेलन' का आयोजन किया गया । हिन्दी के प्रति लोगो को जागरूक करने के लिए प्रत्येक माह कवि सम्मेलन, नुक्कड़ नाटक, निबंध, स्लोगन, कविता प्रतियोगिता आदि विविध गतिविधियों का आयोजन किया जाता है ।

इस अवसर पर कंपनी के अध्यक्ष सह प्रबंध निदेशक श्री अजित कुमार सक्सेना ने सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को ज्यादा से ज्यादा हिन्दी मे कार्य करने हेतु प्रोत्साहित किया । साथ ही कहा की मॉयल लिमिटेड, राजभाषा कार्यान्वयन मे सदैव अग्रणी रहा है । उन्होने आग्रह किया कि राजभाषा हिन्दी का प्रयोग निरंतर बढ़ाया जाए जिससे की आनेवाले समय मे मॉयल लिमिटेड, अपने व्यवसाय के समान ही राजभाषा के क्षेत्र में उच्चतम स्तर पर अपना स्थान सुनिश्चित कर सके । साथ ही यह सुनिश्चित करे कि राजभाषा का उपयोग सुगम और सरल हो। दिनांक 29.09.2023 को हिन्दी पखवाड़ा के समापन अवसर पर पुरस्कार विजेताओं को पुरस्कार देकर सम्मानित किया गया।

खान स्तर पर हिन्दी के प्रसार-प्रचार हेतु आयोजित कार्यक्रम की झलकियाँ

दिनांक 17.07.2023 को बालाघाट खान में काव्य गोष्ठी का आयोजन किया गया

दिनांक 19.07.2023 को गुमगांव खान में नुक्कड नाटक का आयोजन किया गया

दिनांक 22.07.2023 को कान्द्री खान में निबंध प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।

दिनांक 01.08.2023 को कान्द्री खान में नुक्कड नाटक का आयोजन किया गया।

दिनांक 05.08.2023 को डोंगरी बुजुर्ग खान में स्लोगन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।

दिनांक 08.11.2023 को चिखला खान में पोस्टर प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।

वाइस टाइपिंग एवं यूनिकोड

“ दिनांक 28.06.2023,
दिन बुधवार
को मॉयल लिमिटेड, मनसर खान के समूह व्यावसायिक प्रशिक्षण केन्द्र में ''वॉइसटाइपिंग एवं यूनिकोड'' विषय पर कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला में खान स्तर के विभिन्न विभागो में कार्यरत 38 कर्मचारियों ने भाग लिया। ”

इस कार्यशाला में दैनिक कार्यालयीन कार्य में हिन्दी भाषा का अधिक से अधिक उपयोग करने हेतु वाइस टाइपिंग एवं यूनिकोड के बारे में चर्चा की गई । प्रशासनिक कार्यो में हिन्दी भाषा की उपयोगिता एवं ज्यादा से ज्यादा हिन्दी भाषा का उपयोग कैसे किया जाये, इस बारे में वाइस टाइपिंग एवं यूनिकोड की उपयोगिता के बारे में बताया गया । कार्यशाला में आमंत्रित वक्ता श्री अनिल त्रिपाठी जी ने इस विषय पर जानकारी प्रदान करते हुए बताया कि कैसे वाइस टाइपिंग एवं यूनिकोड ई–टूल का उपयोग कर सकते है एवं इसका अधिक से अधिक लाभ कैसे लिया जा सकता है ।

वाइस टाइपिंग एवं यूनिकोड ई–टूल की सहायता से हम कंम्प्यूटर में जैसे अंग्रेजी में सुविधाजनक कार्य करते है,उसी तरह हिन्दी में भी कर सकते है । हिन्दी में शुद्धता एवं तीव्र गति से कार्य करने हेतु यह टूल बहुत ही सहायक है । प्रायोगिक माध्यम से उपस्थित प्रतिभागियों को इस बारे में अवगत कराया गया । हिंदी का उपयोग अधिक से अधिक हो, इस हेतु वॉइस टाइपिंग एवं यूनिकोड एक बेहतर समाधान प्रस्तुत करता है । कार्यशाला में वाइस टाइपिंग एवं यूनिकोड से संबधित बहुत ही उपयोगी जानकारी प्रदान कर उपस्थित प्रतिभागियों को प्रशिक्षित किया गया ।

राष्ट्रीय मेल और राजनीतिक एकता के लिए सारे देश में हिन्दी और नागरी का प्रचार आवश्यक है – लाला लाजपत राय

कुछ यादगार पल

कुल के कारण कोई बड़ा नहीं होता, विद्या ही उसे पूजनीय बनाती है। - चाणक्य

कुछ यादगार पल

कभी-कभी हमें, उन लोगों से शिक्षा मिलती है, जिन्हें हम अभिमान वश अज्ञानी समझते हैं. – प्रेमचंद

कुछ यादगार पल

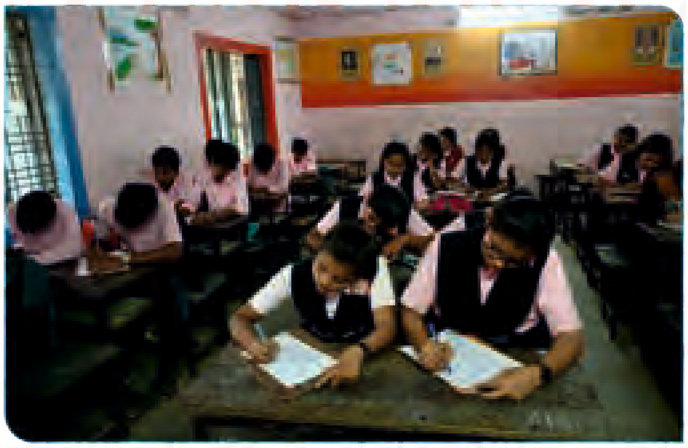

नेक बात चाहे किसी धर्म की हो, किसी आदमी की हो, उसे अवश्य ग्रहण करो. – जवाहरलाल नेहरू

द्विपदी

रिश्ते नातों और अहसासों की डोर हिला के गए
दिल मिलाया था हमने वो सिर्फ हाथ मिला के गए। (१)

कुछ इस तरह से दिल कभी कभी यूँ साफ़ कीजिए
किसी से माफी माँगिए किसी को माफ़ कीजिए।(२)

बहुत देखे हैं तमाशे अपनी पीढ़ी और इन बुजुर्गों के
जीवहिंसा के विरोधी हैं मगर शौकीन बहुत मुर्गों के। (३)

कसक, आँसू, तन्हाई और तड़प के साथ लौटा हूँ
कौन कहता है उसके दर से खाली हाथ लौटा हूँ। (४)

आकाश छूलो, मगर अपनी धरा, भूल मत जाना
जड़ के कारण, पेड़ रहता है हरा, भूल मत जाना। (५)

गंगाजल हो तुम

मेरा स्वप्निल कल हो तुम
मेरे पुण्यों का फल हो तुम।

आम्र बौराई देह का
स्निग्ध साँवले स्नेह का
धवल प्रतिरूप लिए
कस्तूरी-सी मधुर गंध का
देह बसी सोंधी सुगंध का
वरदान अनूप लिए
परम पावन गंगाजल हो तुम।
मेरे पुण्यों का फल हो तुम।

अँखियों की कुंवारी आस
या अनबुझ-सी कोई प्यास
कहीं आस-पास टहले
आमंत्रण के बहके राग
तन में जब सुलगाएं आग
कोई कब तक सह ले
मीठा मदहोश संबल हो तुम।
मेरे पुण्यों का फल हो तुम।

कभी आंवला, कभी बताशा
पल में तोला, पल में माशा,
अभी नहीं पर अभी हो
चुपके से तन दहका जाए
छूकर जो मन महका जाए
रजनीगंधा सुरभि हो

कभी न ठहरे वह पल हो तुम।
मेरे पुण्यों का फल हो तुम।

हम होंगे (जीवनसाथी के नाम)

जैसे जैसे उम्र बढ़ेगी, हरदम होंगे।
जब पास नहीं होगा कोई, तब हम होंगे।

बूढ़ी काया, चिपके रोग, दवा के पर्चे
कुछ भी शौक नहीं, पर बढ़ते जाते खर्चे
झुर्री वाली बाँहों का घट जाएगा दम
नज़र, बुढ़ाई आँखों से जब आएगा कम
चलने फिरने में थोड़े ज़रूर भ्रम होंगे।१

बच्चे अपनी दुनिया में मगन मस्त होंगे
हम दोनों खाँसी से रातभर पस्त होंगे
जब बढ़ जाएगी खाँसी, कफ होगा गाढ़ा
मैं तुलसी तोड़ूगा तुम बना लेना काढ़ा
दो चुस्की लेने पर, ठसके कुछ तो कम होंगे।२

साथ हँसे हैं, साथ कभी रो गए हम दोनों
एक और एक ग्यारह अब हो गए हम दोनों
तूफानों का हरदम डर मगर हम लड़ेंगे
कश्ती हो जाए जर्जर मगर हम लड़ेंगे
एक दूजे की लाठी, ओ साथी हम होंगे।३

इधर बुढ़ापे की दाँतों से कब पटती है
उधर मसूड़ों से भी रोटी कम कटती है
मीठे पर बहुओं बेटों के सौ पहरे हैं
तीखी मिर्ची के पर ज़ख्म बहुत गहरे हैं
बस यादों के कुछ मधुर मधुर मौसम होंगे।४

राजेश श्रीवास्तव
उप निदेशक रा.भा., राजभाषा विभाग, गृहमंत्रालय

वे इतिहास नहीं बना सकते जो इतिहास को भूल जाते हैं। – बाबा साहेब अंबेडकर

प्रेमचन्द के उपन्यास जगत् में दलित और किसान

प्रो प्रणव शास्त्री
सदस्य
हिंदी सलाहकार समिति,
इस्पात मंत्रालय, नई दिल्ली

उपन्यास साहित्य में प्रेमचन्द का स्थान मील के पत्थर के समान है। उन्हें उपन्यास सम्राट के विशेषण से विभूषित किया गया है। प्रारम्भ में, प्रेमचन्द उर्दू के अध्येता एवं लेखक थे। अत: उनकी समस्त प्रारम्भिक रचनाऐं उर्दू में ही लिखी गयी। उन्होंने हिन्दी में सर्वप्रथम 'प्रेमा' और 'वरदान' उपन्यास लिखा जो 1902 ई. में प्रकाशित हुआ। 1906 ई. में 'प्रतिज्ञा' और 1916 ई. में 'सेवासदन' प्रकाशित हुआ। 'सेवासदन' उर्दू में 'बाजार-ए-हुस्न' के नाम से प्रकाशित किया गया।

राजनीतिक उपन्यासों में कायाकल्प, प्रेमाश्रय, कर्मभूमि तथा रंगभूमि उल्लेख्य हैं तथा सामाजिक उपन्यासों में वरदान, सेवासदन, प्रतिज्ञा, निर्मला तथा गबन प्रमुख हैं। प्रेमचन्द अपने उपन्यासों में उत्तर भारत के सम्पूर्ण जीवन-कर्म को समेटे हुए हैं। उनमें तत्कालीन उत्तर भारत की विभिन्न गतिविधियों को चित्रित किया गया है। उनमें समाज का अंग-प्रत्यंग साकार हो उठा है। तत्कालीन परिस्थितियों एवं समाज को दीमक की तरह चाटकर खोखला कर देने वाली विभिन्न समस्याओं को प्रेमचन्द ने अपने उपन्यासों में प्रतिबिम्बित किया है। समाज के विभिन्न फलकों को चित्रित करते हुए उन्होंने समाज के दलित वर्ग, जो समाज का सर्वथा उपेक्षित वर्ग रहा है, को सर्वाधिक स्थान दिया है।

प्रेमचन्द को कथा सम्राट के रूप में ही मान्यता मिली है, यद्यपि उनका सम्पूर्ण साहित्य उपन्यास, कहानियाँ, लेख एवं टिप्पणियाँ क्रांतिकारी विचारों से ओत-प्रोत हैं। वे परम्पराओं, रूढ़ियों, अन्धविश्वासों यानि अतीत के बोझ से कभी अभिभूत नहीं रहे। ''पटना का हिन्दी साहित्य परिषद'' शीर्षक अपने लेख में उन्होंने कहा है, ''प्राचीन हमें अगर आदर्श और मार्ग देता है, तो उसके साथ ही रूढ़ियाँ और अन्धविश्वास भी देता है।

प्रेमचन्द के साहित्य में ग्रामीण जीवन का चरित्र झलकता है। उनके पहले उपन्यास 'असरारे मुआविद' में पंडों और महन्तों के कुकर्मो का भंडाफोड़ किया है। 'गोदान' में तो जमींदारों, उनके कारिन्दों, पंचों-चौधरियों, साहूकारों तथा सूदखोरों के करतूत, शोषण, जुल्मों-सितम की परतें खुली हैं। 'मंगलसूत्र' उनका अंतिम उपन्यास था जिसे अपूर्ण छोड़कर वे चल बसे थे।

हिन्दी उपन्यास साहित्य में प्रेमचन्द (1880-1936 ई.) का आविर्भाव एक युगांतकारी घटना रही है। 1918 से पहले ही उन्होंने उपन्यास के क्षेत्र में कदम रखा था, पर 1918 ई. में प्रकाशित उनके 'सेवासदन' उपन्यास ने हिन्दी साहित्य को नया मोड़ दिया। प्रेमचन्द जी का जन्म (1880 ई.) में एक किसान परिवार में हुआ था और उनका जीवन गरीबी से संघर्ष करने में बीता। उन पर आर्य समाज का प्रभाव तो था ही, साथ ही वे गांधीवादी विचारधारा से भी जुड़े थे। महात्मा गांधी के राष्ट्रीय आंदोलन से तथा उनके उदात्त मूल्यों से प्रेमचन्द काफी प्रभावित थे।

गांधीवाद विचारों का प्रभाव उनके 'सेवासदन' (1918), 'प्रेमाश्रय' (1922), "रंगभूमि"(1924),'काया कल्प' (1926), 'निर्मला'(1927) आदि उपन्यासों पर देखा जा सकता है। जीवन के अंतिम वर्षो में वे मार्क्सवाद से भी जुड़े थे और 'गबन' (1931) तथा 'गोदान' (1936) उपन्यास भी इसी प्रभाव स्वरूप लिखे गये। प्रेमचन्द ने हिन्दी उपन्यास को'सेवासदन' के माध्यम से प्रथम बार समाज के साथ जोड़ा। हिन्दी उपन्यास को यथार्थ की जमीन पर खड़ा किया। 'प्रेमाश्रम' गांधीवादी आदर्शो पर लिखा गया प्रसिद्ध उपन्यास है। 'रंगभूमि' में भी किसानों व पूर्जीपतियों का संघर्ष चित्रण है, परन्तु इस संघर्ष की अपनी मर्यादाऐं हैं। 'गबन' में मध्यवर्ग की कमजोरियों पर प्रकाश डाला गया है। 'गोदान' 1936 ई. में प्रकाशित प्रेमचन्द जी का सर्वश्रेष्ठ उपन्यास है। प्रेमचन्द 'गोदान' में भारतीय किसान का, ग्रामीण जीवन का, कृषि संस्कृति का यथार्थ जीवन प्रस्तुत करते हैं। इस उपन्यास का नायक होरी भारतीय किसानों का सच्चे अर्थो में प्रतिनिधित्व करता है। इस उपन्यास में भारतीय किसानों का जितना सच्चा, व्यापक और प्रभावशाली चित्रण हुआ है, उतना अन्य किसी उपन्यास में देखने को नहीं मिलता। गोदान का विषय औपनिवेशिक शासन में भारतीय समाज में व्याप्त-शोषण-चक्र।

सेवादसदन' की समस्या मध्यमवर्ग से सम्बन्धित है। 'सेवासदन' में वेश्या-जीवन को एक सामाजिक संदर्भ से देखा गया है। 'सेवासदन' में पदमसिंह के रूप में मानो स्वयं प्रेमचन्द कहते हैं, ''हमें उनसे (वेश्याओं से) घृणा करने का कोई अधिकार नहीं है। यह उनके साथ घोर अन्याय होगा। ये हमारी ही कुवासनायें, हमारे ही सामाजिक अत्याचार, हमारी ही कुप्रथाऐं हैं, जिन्होंने वेश्याओं का रूप धारण किया है। यह दालमंडी, हमारे ही कलुषित जीवन का प्रतिबिम्ब, हमारे ही पैशाचिक अधर्म का साक्षात् स्वरूप है। हम किस मुँह से उनसे घृणा करें। उनकी अवस्था बहुत सोचनीय है। हमारा कर्तव्य है कि हम उन्हें सन्मार्ग पर लायें, उनके जीवन को सुधारें।

'रंगभूमि' (1925) हिन्दी का पहला उपन्यास है जिसमें चमार सूरदास की नायक की भूमिका में है। सूरदास नारी-शोषण के विरुद्ध आवाज उठाता है, जाति-पाँति, मिथ्या, धर्म-कर्म के प्रति असन्तोष है। उच्चवर्ग की उच्चता और निम्नवर्ग की निम्नता के सिद्धान्त को खंडित किया गया है। एक ओर उच्चवर्ग के तमाम लोगों के छोटे कर्मो का चित्रण किया गया है, तो दूसरी ओर सूरदास, सुभागी, नववासियों और चमारों के मानवीय उच्चताओं से मुक्त कर्मो का विधान किया गया है। इस उपन्यास में दलितों के लिए आर्थिक लाभ की चर्चा की गई है, राजा साहब सूरदास से कहते हैं कि ''सोचो तो इस कारखाने से लाखों का फायदा होगा। हजारों मजदूर, स्त्री, बाबू, मुंशी, लुहार, बढ़ई आकर आबाद हो जायेंगे, एक अच्छी बस्ती हो जायेगी, बनियों की नई-नई दुकानें खुल जायेंगी, आस-पास के किसानों को अपनी शाक-भाजी लेकर शहर न जाना पड़ेगा, यहीं खरे दाम मिल जायेंगे। कुँजड़े, खटीक, ग्वाले, धोबी, दर्जी सभी को लाभ होगा।'' इस प्रकार के आर्थिक लाभ की चर्चा अन्यत्र कई स्थलों पर आई है।

'कर्मभूमि' (1932)- एक दिन अमरकान्त घर छोड़कर चला जाता है, और दलितों के गाँव में सेवा के उद्देश्य से रहने लगता है। अमरकान्त की पत्नी सुखदा शहर से अछूतों के लिए एक मंदिर बनवाना चाहती है। यह उपन्यास सामाजिक दृष्टि से बहुआयामी है। इसमें राजनीतिक चेतना के मूल स्वर के साथ सामाजिक और आर्थिक चेतना के कई स्वर गूंथ दिये गये हैं। अमरकान्त समाज-सेवक है। वह समाज सेवा के ऊपरी रूप से होता हुआ बुनियादी रूप तक पहुँच जाता है। वह जाने अनजाने चमारों के गाँव में पहुँच जाता है और वह जैसे पहचान जाता है कि सेवा के प्रथम हकदार ये ही हैं और सेवा का अर्थ केवल सामाजिक भेदभाव दूर करना नहीं है बल्कि उन्हें आर्थिक शोषण से मुक्ति दिलाना है, और यही सेवा राजनीतिक रूप ले लेती है और सत्ता से टकराती है।'गोदान' (1936) : गोदान प्रेमचन्द का ही नहीं हिन्दी उपन्यास साहित्य का श्रेष्ठ यथार्थवादी उपन्यास है। 'गोदान' की कथा का केन्द्र है।

होरी नामक किसान की जीवन। होरी अपने समस्त गुण-दोष, अभाव और शक्ति के साथ भारत का सच्चा किसान है। भारतीय किसान की तरह होरी भी गाय रखने की इच्छा रखता है। इस उपन्यास में होरी की व्यथा-गाथा का कहीं अन्त नहीं है- कर्ज और दु:ख की एक लम्बी श्रृंखला है। अनेक घटनाऐं घटती हैं जो उसे निरन्तर तोड़ती जाती हैं, उसे एक अधेड़ के साथ अपनी बेटी भी बेचनी पड़ती है, खेत बेचने पड़ते हैं, फिर भी गाय की इच्छा उसके मन से नहीं हटती। वह गाय के लिए जी-तोड़ मेहनत करता है और इसी इच्छा को लिये मर जाता है।

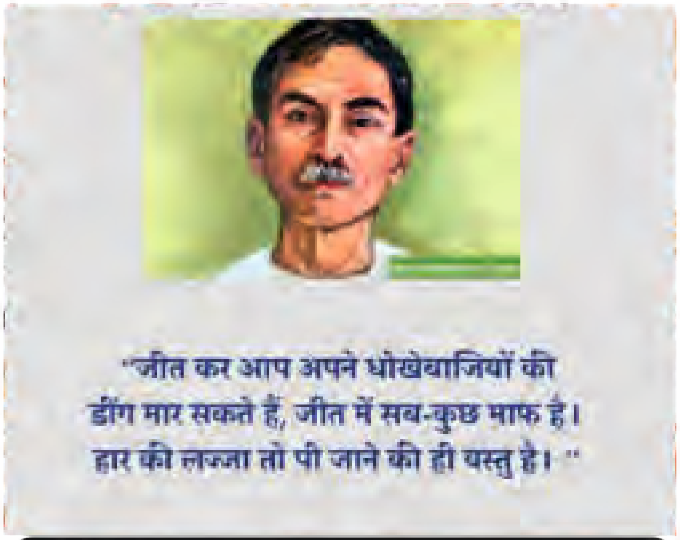

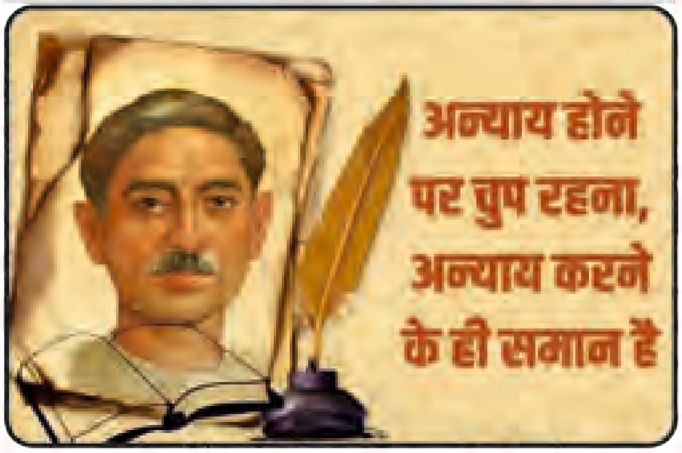

खुली हवा मे चरित्र के भ्रष्ट होने की उससे कम संभावना है, जितना बन्द कमरे में ।
-प्रेमचंद-

यूँ तो समूचे विश्व में अंग्रेजी नव-वर्ष 2024 के आगमन का उत्सव ज़ोर शोर से मनाया गया। चारों ओर भौतिकवाद के साँचे से निकले बाजार में वस्तुओं और पदार्थों के साथ आधुनिक उत्सव प्रेमी अपने-अपने ढंग से नवाचार करने में जुटे रहे। गीत-संगीत, धूम-धड़ाका और साजो-सामान पर बेतहाशा दौलत के साथ-साथ एक दूसरे के साथ बधाई संदेशों का प्रचुर संप्रेषण भी किया गया।स्वयं को अघोषित आधुनिकतावाद के पैरोकार समझने वाले लोग उत्साह-उमंग के साथ नव वर्ष के नव अभिनव प्रयोग करने में जुटे रहे । लेकिन शायद पहली बार बिना किसी संकोच के कहा जा सकता है कि यह अंग्रेज़ी नव-वर्ष हम भारतीयों के लिए भी सच मायनों में कुछ नयापन लेकर आया है।

रामाय रामभद्राय रामचंद्राय वेधसे !
रघुनाथाय नाथाय सीतायाः पतये नमः!!

वह नयापन आधुनिक और पुरातन का नवीनतम मिश्रण है। जहां अध्यात्म और संवेदना के साथ-साथ ज्ञान-विज्ञान और भौतिक संपन्नता देखने को प्राप्त हो रही है।कितने वर्षों की प्रतीक्षा के बाद अयोध्या में नव-निर्मित मंदिर में भगवान राम लला विराजमान हो गये हैं। मंदिर परिसर २२ जनवरी को देश के प्रधानमंत्री द्वारा वैदिक विधि-विधान से पूजन के पश्चात् आम जनता के दर्शनार्थ समर्पित किया गया है। उसके पूर्व अत्याधुनिक वैभव से संपन्न अयोध्या में एयरपोर्ट का शुभारंभ भी चर्चा और ध्यानाकर्षण का एक विषय बना। कुल मिलाकर आस्था वाहन देशवासियों का मन कलियुग से त्रेता युग के गलियारे में चहल कदमी कर रहा है। पूरी अयोध्या विह्वल नेत्रों से इस क्षण की प्रतीक्षा कर रही थी। इस प्रतीक्षा में अयोध्या की गली- गली राम- राम का संकीर्तन करती हुई प्रतीत हो रही।

अयोध्या का चप्पा-चप्पा मानो एक ही बात कह रहा था कि अब तो सब बाधाएँ भी हट गई हैं अब काहे की देरी कर रहे हो नाथ, अब क्षण भर की देरी भी सहस्त्रों युग की भाँति प्रतीत हो रही है। मेरे राम! अब तो आ जाओ।

अयोध्या और पूरे देश की इसी आस्था का सम्मान करते हुए जन प्रिय प्रधानमंत्री मा. मोदी जी के विशेष मार्गदर्शन में कारीगर और प्रशासन के मिले जुले सहयोग से मंदिर निर्माण का कार्य जिस गति और उत्साह के साथ संपन्न किया और जन्मभूमि के भव्य एवं दिव्य परिसर का निर्माण हुआ वह अपने आप में ऐतिहासिक एवं गौरवान्वित करने वाला है। इतने कम समय में भव्य एवं दिव्य मंदिर निर्माण हम सभी के लिए एक अभूतपूर्व उपलब्धि है । क्योंकि प्रायः सरकारों के विषय में यह बात प्रचलित है कि उनके कार्य करने की गति कछुए की चाल सरीखी होती है । लेकिन अब वक्त बदल रहा है । ये नये दौर का भारत है जिसमें जवाबदेही, अनुशासन, उच्च तकनीकी कौशल और राष्ट्रीयता के प्रति कर्तव्य बोध सम्मिलित है।इसीलिए यूरोप सहित समूचा विश्व आज भारत वर्ष का यशगान मुक्त कंठ से कर रहा है।

एक ओर काशी में बाबा विश्वनाथ कारिडोर, उज्जैन का महाकाल लोक और अब अयोध्या का राम मंदिर सांस्कृतिक विरासत का प्रतिनिधित्व कर रहे हैं तो दूसरी ओर मेक इन इण्डिया के रूप में सशक्त राष्ट्र के नव निर्माण की अद्भुत झांकी समूचा विश्व देख रहा है।देश के सांस्कृतिक विकास और सैन्य शक्ति की संपन्नता के साथ-साथ चंद्रयान और मंगलयान के रूप में तकनीकी और विज्ञान की उन्नति भी सतत जारी है। जिसका लोहा आज संपूर्ण विश्व मान रहा है।

यही कारण है कि आज भारत अपनी ज़रूरतों के लिए विश्व की ओर नहीं अपितु विश्व अपनी जरूरतों के लिए भारत की ओर देख रहा है।

जिन लोगों के लिए राम मंदिर की भव्यता और दिव्यता प्रश्नवाचक हो, जिन्हें यह बात नागवार गुजर रही हो कि क्या आवश्यकता है इतने पैसे एक मंदिर के लिए खर्च करने की उन्हें शायद इतना भी ज्ञान नहीं कि राम भारत के प्रभात का प्रथम स्वर हैं। जो केवल चरित्र नहीं भारत के कण-कण में व्याप्त मिलेंगे। राम व्यक्ति नहीं गुणों की समष्टि हैं। राम मंदिर में रहने वाले केवल भगवान नहीं बल्कि जन-जन के मन में बसने वाली आस्था हैं। राम वह सामर्थ चेतना हैं जो देश के सवा सौ करोड़ देशवासियों के शरीर में अनुभव की जा सके इसीलिए कोई आक्रांता उन्हें भारत से अलग कर पाये ये तो वैसा ही है जैसे बिना प्राण के शरीर को जीवित रखना ।

राम मंदिर का भव्य और दिव्य परिसर इस बात का स्पष्ट प्रमाण भी है कि यह देश अपनी आस्था और जड़ से कभी अलग नहीं हो सकता। वह आधुनिकता से कदम ताल तो करता ही है किंतु अपने मूल को कभी विस्मृत नहीं होने देता। वह अपने इतिहास अपनी संस्कृति और संस्कारों के संरक्षण का परम पोषक है जिसके लिये उसके जीवन मूल्य प्राणों से भी बढ़कर हैं। जीवन का उद्देश्य केवल जीना नहीं अपितु स्वाभिमान से सर उठाकर अपने अतीत और वर्तमान के साथ चलने में है। इसीलिए पूरा देश पलक बिछाये राममंदिर में भगवान के बाल स्वरूप के दर्शन -स्वागत हेतु ललायित है।

कह रही है ये धरा ये व्योम ये सारी दिशाएँ,
आप प्रभु के नाम को हमसे अलग कैसे करोगे।
छीनने में जुट गये क्यों आत्मा को देह से तुम,
इस पुरातन धाम को हमसे अलग कैसे करोगे।
आत्म-गौरव संस्कृति के आचरण से युगपुरुष भी,
इस छटा अविराम को हमसे अलग कैसे करोगे।
रक्त बन कर जो प्रवाहित है वतन की धमनियों में,
आप प्रभु श्री राम को हमसे अलग कैसे करोगे।।

राधाकांत पांडे

घमंड से आदमी फूल सकता है, फल नहीं सकता है। – प्रेमचन्द

मॉयल – समाचार पत्र की कुछ झलकियाँ

हास्य कविताओं से गुदगुदाया

पत्रिका न्यूज नेटवर्क
patrika.com

बालाघाट. मॉयल लिमिटेड भरवेली बालाघाट खदान में नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति के सदस्यों के मध्य काव्य गोष्ठी आयोजित की गई। जिसमें नगर के कवियों ने अपनी प्रतिभागिता दर्ज की।

भरवेली खदान के विश्राम गृह में आयोजित इस कार्यक्रम में राजेश सिंह अभिकर्ता एवं संयुक्त महाप्रबंधक खान समूह 1, मयंक जैन खान प्रबंधक, रितेश माने, एलएस बघेल व अन्य अधिकारियों की उपस्थिति रही।

संगोष्ठी में नगर राजभाषा समिति के अध्यक्ष दत्ता कावस्कर, प्राचार्य पंकज जैन, डिप्टी कमांड अधिकारी रंजिन्दर कौर, बैंक प्रबंधक देव खाडेकर, वीरेन्द्र सोनी तथा प्राध्यापक टीएम बघकुलकर इत्यादि के मध्य संगोष्ठी में कविता, रचना, शेर, हास्य कविताएं, ओज एवं वीर रस की कविताओं का पठन पाठन किया गया। प्रदीप स्वामी ने अपनी हास्य रचनाओं का वाचन किया। माधुरी किरण ने भी अपनी रचनाओं से अधिकारी एवं कर्मचारियों का मन मोहा। निजहत खान ने अपने शब्दबाणों से मंच एवं श्रोता तथा कवियों को ताली बजाने मजबूर कर दिया। कवि गोष्ठी के सभी कवियों को जोड़ने एवं उक्त गोष्ठी को अमीन स्वरूप देने का कार्य दिनेश गौतम कनिष्ठ अधिकारी कार्मिक ने किया।

मॉयल के 61वें स्थापना दिवस पर मिठाई का वितरण, कंपनी मुख्यालय में हुआ रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रम

मॉयल प्रबंधन एवं पंचायत प्रतिनिधियों की संयुक्त बैठक में जल वितरण समस्या का समाधान

कंपनी निगमित सामाजिक उत्तरदायित्व निर्वाहन के प्रति गंभीरः सिंह

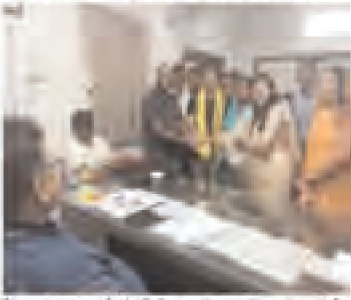

मॉयल में स्वतंत्रता दिवस पर कामगार हुए सम्मानित

मानव का दानव होना उसकी हार है, मानव का महामानव होना उसका चमत्कार है, और मनुष्य का मानव होना उसकी जीत है। – डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन

मॉयल - समाचार पत्र की कुछ झलकियाँ

टाइगरमैन ट्रायथलॉन 10 फरवरी से

मॉयल में 2023 के उत्पादन में 16 लाख टन की ऐतिहासिक वृद्धि..

मॉयल प्रबंधन द्वारा दी गई जानकारी के अनुसार भारत सरकार के इस्पात मंत्रालय के अंतर्गत आने वाले इस उपक्रम ने कैलेंडर वर्ष में 20 दिसम्बर 2023 तक 16 लाख से अधिक उत्पादन के साथ मॉयल द्वारा एक और ऐतिहासिक उपलब्धि दर्ज कराई है।

मॉयल लिमिटेड बालाघाट खान में काव्य गोष्ठी का हुआ आयोजन

मॉयल में हिन्दी पखवाड़ा में कवि सम्मेलन का आयोजन

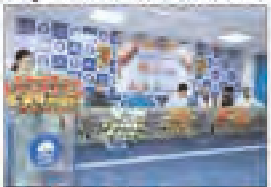

मॉयल की सभी खदानों में शान से मनाई गई स्वतंत्रता दिवस की 77वीं वर्षगांठ

मॉयल में फीट इंडिया फ्रीडम रन 4.0 कार्यक्रम का आयोजन

मॉयल के 61वें स्थापना दिवस पर मिठाई का वितरण, कंपनी मुख्यालय में हुआ रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रम

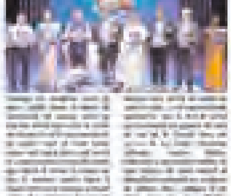

मॉयल ने तिमाही में सर्वश्रेष्ठ उत्पादन वृद्धि हासिल की

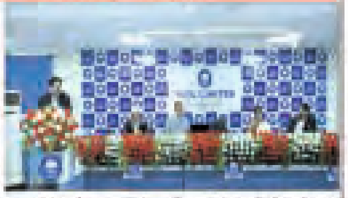

लोकमत समाचार

बिजनेस न्यूज

मॉयल ने 61वां स्थापना दिवस मनाया

नागपुर : मॉयल ने हाल ही में अपना 61वां स्थापना दिवस मनाया. इस मौके पर इस्पात मंत्रालय के सचिव नागेंद्रनाथ सिन्हा मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे. उन्होंने मॉयल समूह को बधाई देते हुए उत्पादन बढ़ाने के लिए प्रोत्साहित किया. अजित कुमार सक्सेना ने कंपनी के शानदार प्रदर्शन पर प्रकाश डालते हुए भरोसा जताया कि वित्त वर्ष 2024 में रिकॉर्ड प्रदर्शन की योजना सफल होगी. अतिथियों ने कई पत्रिकाओं एवं मैनुअल का विमोचन किया. भव्य संगीत समारोह में स्टार कलाकार पवनदीप राजन और अरुणिता कांजीलाल (इंडियन आइडल 12 विजेता) और गौरव शर्मा, स्टैंड-अप कॉमेडियन ने प्रस्तुति दी. संयुक्त सचिव संजय रॉय, राकेश तुमाने निदेशक (वित्त), उषा सिंह निदेशक (मानव संसाधन), पीवीवी पटनायक निदेशक (वाणिज्यिक) और एम.एम. अब्दुल्ला निदेशक (उत्पादन एवं योजना) उपस्थित थे. इसी कड़ी में खदानों में 60,000 पौधारोपण, रक्तदान शिविर, चिकित्सा और हृदय निदान शिविर, सभी खदानों में सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किए जाएंगे.

भूख की भट्टी में सोचने और समझने की ताकत जल-भुनकर खाक हो जाती है बबुआ। – नागार्जुन

मॉयल - समाचार पत्र की कुछ झलकियाँ

मॉयल ने प्रथम छह माह में सर्वश्रेष्ठ उत्पादन को छुआ

मॉयल की अगस्त माह में उत्पादन दर में 53 प्रतिशत की बढ़ोत्तरी

मॉयल ने अप्रैल-जून 23 में सबसे अच्छा तिमाही उत्पादन हासिल किया

जिले के पालक मंत्री ने मॉयल के भूमिगत खदान का किया भ्रमण

मेहमानों का सम्मान करना कंपनी का कर्तव्य - सिंह

मॉयल लिमिटेड की खदानो में स्वच्छता ही सेवा के अंतर्गत श्रमदान

मॉयल बालाघाट खान को मिला एक्सीलेंट अवार्ड..

नवभारत

मनसर में श्रमिकों के लिए कार्यशाला का आयोजन

खान कर्मियों को नये नियमों से कराया अवगत

भरवेली मॉयल चिकित्सालय में 61 लोगों ने किया रक्तदान

मानव का दानव होना उसकी हार है, मानव का महामानव होना उसका चमत्कार है, और मनुष्य का मानव होना उसकी जीत है - डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन

खनिज और खनन

पी.के. मिश्रा
उप महाप्रबंधक (रसायन)

> आज के आधुनिक युग में खनिजों तथा धातुओं की खपत इतनी अधिक हो गई है कि प्रति वर्ष उनकी आवश्यकता करोड़ों टन की होती है।

प्राकृतिक रूप से प्राप्त होने वाला पदार्थ जिसका निश्चित रासायनिक संघटन हो वह एक खनिज है। खनिज सभी स्थानों पर समान रूप से वितरित नही है। वे किसी विशेष क्षेत्र में या शैल समूहों में सकेन्द्रित है। खनिज विभिन्न प्रकार के भूवैज्ञानिक परिवेश में अलग अलग दशाओं में निर्मित होते है। वे बिना मानवीय हस्तक्षेप के प्राकृतिक प्रक्रियाओं द्वारा निर्मित होते हैं। वे अपने भौतिक गुणों, जैसे रंग घनत्व, कठोरता और रासायनिक गुणों के आधार पर पहचाने जाते हैं। पृथ्वी पर तीन हजार से अधिक विभिन्न खनिज है। जिनमें से केवल लगभग 100 अयस्क खनिज समझे जाते है।

संरचना के आधार पर खनिजों को मुख्यतः धात्विक और अधात्विक खनिजों में वर्गीकृत किया गया है। धात्विक खनिज वे है, जिनमें धातु अथवा धातु यौगिक होते हैं, जैसे लोहा, मैंगनीज, सोना, चाँदी आदि, और अधात्विक खनिज वे है, जिनमें धातु नहीं होती जैसे चूना पत्थर, कोयला, अभ्रक जिप्सम आदि।

किसी भी देश के आर्थिक विकास और राष्ट्रीय सुरक्षा में खनिज का विशेष योगदान हमेशा से रहा है। विभिन्न देशों के पास अपनो विशिष्ट परिस्थियों और प्राथमिकताओं के आधार पर महत्वपूर्ण खनिजों की अपनी विशेष सूची भी है। अमेरिका ने राष्ट्रीय सुरक्षा और आर्थिक विकास में खनिजों की भूमिका को ध्यान में रखते हुए 50 खनिजों के एक समूह को अपनी अर्थव्यवस्था के लिए महत्वपूर्ण माना है। वही पर जापान ने 31 खनिजों के एक समूह को अपनी अर्थव्यवस्था के लिए महत्वपूर्ण घोषित किया है। इसी प्रकार यूनाइटेड किंगडम ने 18, यूरोपीय संघ ने 34 और कनाडा ने 31 खनिजों को महत्वपूर्ण माना है. खान मंत्रालय के अंर्तगत विशेष समिती ने भारत के 30 महत्वपूर्ण खनिजों के एक समूह की पहचान की हो जो इस प्रकार है, एंटीमनी, मोलिब्डेनम, विस्मथ, कोबाल्ट, कापर, गैलियम, जर्मेनयम, ग्रेफाइट, हेफनियम, इंडियम लिथियम, बेरिलियम, नाइओनियन, निकेल, पीजीई, फास्फोरस, पोटाश, आरईई, रेनियम, सिलिकॉन स्ट्रॉंटियम, टैंटलम, टेल्यूरियम, टिन, टाइटेनियम, टंगस्टन, वैनेडियम, जिरकोनियम, सेलेनियम, और कैडमियम है।

अपने दिल, दिमाग और आत्मा को अपने छोटे से छोटे कार्यों में भी लगाओ। यही सफलता का राज है। - स्वामी विवेकानंद

नवीकरणीय ऊर्जा प्रौद्योगिकियों के निर्माण और इलेक्ट्रिक वाहनों के संक्रमण हेतु बड़ी मात्रा में खनिजों जैसे तांबा, मैगनीज, जस्ता, लिथियम कोबाल्ट एवं अन्य दुर्लभ तत्वों की आवश्यकता होती है। इसके साथ ही साथ खनिजों का उपयोग और भी कई बड़े उद्योगों में होता है। रत्नों के लिए प्रयोग किए जाने वाले खनिज प्रायः कठोर होते हैं। इन्हे आभूषण बनाने के लिए विभिन्न शैलियों में जड़ा जाता है। ताँबा एक अन्य धातु है। जिसका उपयोग सिक्के से लेकर बर्तन, पाइप लाइन मशीनरी आदि में किया जाता है। कम्प्युटर उद्योग में प्रयुक्त होने वाला सिलिकान, क्वाटर्ज से प्राप्त किया जाता है। ऐलुमिनियम जिसे उसके अयस्क बाक्साइट से प्राप्त किया जाता है का उपयोग ऑटोमाबाइल और हवाई जहाज, बोतल बंदी उद्योग भवन निर्माण और रसोई के बर्तन आदि तक बनाने में होता है।

चूकि खनिजों के निर्माण और संचयन में हजारों वर्ष लगते हैं। और मानवीय उद्योग की दर की तुलना में निर्माण की दर बहुत धीमी है। इसलिए खान की प्रक्रिया में खनिजों की बर्बादी को घटाना भी अति आवश्यक है। जिससे खनिज संसाधनों को संरक्षित किया जा सकता है। और समुचित विकास कार्य के लिए लगाया जा सके।

खनिज का खनन बहुत ही प्राचीन काल से प्रचलित है। पृथ्वी के गर्भ से धातुओं, अयस्को, औद्योगिक तथा अन्य उपयोगी खनिजों को बाहर निकालने प्रक्रिया ही खनन है। पहले के समय में खानें 100 फुट की गहराई से अधिक नहीं की जाती थी क्योंकि इसके अंदर से पानी बहुत जल्द ही निकल आता था। और वहाँ नीचे खनन करना असंभव हो जाता था, उस समय आधुनिक ढंग के पंप आदि यंत्र नहीं थे। आज के युग में खनन प्रक्रिया को तीन भागों में विभाजित किया है। 1) तलीय खनन 2) जलोढ खनन 3) भूमिगत खनन । तलीय खान में धरातल के ऊपर जो पहाड़ आदि होते है उनको तोड़कर खनिज प्राप्त किए जाते है। जैसे चूने का पत्थर, ग्रेनाइट, लोह अयस्क अदि । जलोढ़ खनन में प्राचीन नदियों में कुछ अवसाद एकत्रित हो जाते हैं। उनमें कभी कभी बहुमूल्य धातुएं भी निक्षिप्त हो जाती है। इन अवसादों को तोड़कर धातुओं की प्राप्ति करना ही जलोढ खान के अंर्तगत आता है। ये धातुएँ नदी की तलहटी में मिलती है। और कई बार इनमें सोने जैसी बहुमूल्य धातुएँ भी प्रर्याप्त मात्रा में मिल जाती है। नदियों से बालू में भी खनिज पाए जाते है। जिनको उपयुक्त विधि द्वारा पृथक कर उपयोगी बनाया जाएत है।

अनेक प्रकार के खनिजों तथा अयस्कों के उत्खनन में भूमिगत खान का सहारा लेना पड़ता है। भूमिगत निक्षेप दो प्रकार

के हो सकते है। 1) जो स्तर रुप में मिलते हो जैसे कोयला 2) धात्विक पट्टिकाएँ । इन दोनों प्रकार के निक्षेपों की प्रकृति नितांत भिन्न होती है। इसलिए इसके खनन की विधियाँ भी सुविधानुसार अलग- अलग होती है। खानों में कार्य आंरभ करने से पहले पूर्वेक्षण तथा गवेषणात्मक कार्यो को सावधानी पूर्वक कर लिया जाता है। इसके पश्चात खान का विकास कार्य प्रारंभ होता है। सर्वप्रथम कूप बनाएँ जाते हैं। इसका व्यास 10-12 फुट तक लगभग होता है। यदि निक्षेपों की गहराई कम होती है। तो प्रवणकों का ही निर्माण कर लिया जाता है। यदि आवश्यकता हुई तो भूमिगत मार्ग तथा गैलरियाँ भी बना ली जाती है। जिन शिलाओं से होता हुआ कूप जाता है यदि वे सुदृढ नहीं होती तो इस्पात, सीमेंट आदि के अस्तर की भी अवश्यकता पडती है । भूमिगत खनन में कूपों का बड़ा महत्व है, क्योंकि कर्मचारियों का खान में आना जाना, खनिज पदार्थो का बाहर आना, वायु का संचालन तथा खान से पानी बाहेर फेकने के लिए पंपो का स्थापन इन्हीं से संन्चालित होता है। किसी भी खान में कम से कम दो कूप अवश्य होते हैं। भूमिगत खानों में उपयुक्त प्रकाश तथा शुद्ध वायु के आवागमन का प्रबंध अतिआवश्यक है। आज के आधुनिक युग में खानों में विद्युत प्रकाश भी उपलब्ध है ।

आज के आधुनिक युग में खनिजों तथा धातुओं की खपत इतनी अधिक हो गई है, कि प्रति वर्ष उनकी आवश्यकता करोड़ों टन की होती है। इस खपत की पूर्ति के लिए बडी - बडी खानों की आवश्यकता है एवं आधुनिकीकरण की निरंतर जरुरत है, जिससे कि आने वाले समय में देश के आर्थिक विकास और राष्ट्रीय सुरक्षा की पूर्ति श्रृंखला में निरंतरता बनी रहे ।

❑❑❑

चले कलम के सुहाने सफर की ओर....

पूजा वर्मा
(राजभाषा अधिकारी)

कलम यानी पेन का सफर बहुत लंबा है । देखा जाए तो सदियों पुराना है । इसी कलम ने सोच, एहसास और इतिहास तक का संग्रह बनाने में सबसे बड़ी भूमिका निभाई है । इसी कलम की बजह से आज हमें अपने पूर्वजों के बारे में जानकारियां मिली है । माना जाता है कि पहले नुकीले पत्थरों से लिखने का काम दुनियां में आरंभ किया गया । गुफाओं में रहने वाले लोगों ने इन्हीं नुकीले पत्थरों से दीवारों पर चित्रकारियां की । इन चित्रों में उनके जिंदगी की झलक थी । अंत में 3000 ईसा पूर्व में कलम ने वास्तविक आकार ले लिया। मिस्र के मेसोपोटामिया के लोगों ने पेपर जैसी चीज खोजी । इसका नाम पपाइरस था। इस पतले से कड़े कागज पर लिखने के लिए मिस्र के लोगों ने रीड कलम (Reed pen) का निर्माण किमा, रीड कलम को जुनकस मारीटिमस नामक पौधे से बनाया जाता था । ये कलम बांस के पौधे के तने व प्राकृतिक तत्वों से बनाये गये थे। और इनका उपयोग पटल पर लिखने के लिए किया जाने लगा । इसके बाद 1300 ईसा पूर्व रोमनों ने एक धातु का कलम बिकसित किया था जिसका उपयोग मोम के टेबल पर लिखने के लिए किया गया था । यह तीखे नोक वाला धातु से निर्मित कलम था। लिखने के दूसरे उपकरण के रूप में क्विल कलम (Quil pen) यानी किसी पंक्षी के पंख से बना कलम भी लंबे समय तक उपयोग में लाया जाता रहा । समय के साथ लोगों ने हर क्षेत्र में काफी उन्नति की। साथ ही लेखन क्षेत्र में भी अपनी निर्माण कुशलता दिखाते हुए उन्होने लेखन सामग्री को भी विकसित किया, और 19 वी शताब्दी में आधुनिक फांउटेन कलम (Fountain Pen) विकसित हुआ। रोमन के अविष्कारक पेट्राचे पोपनार (Petrache Poenary) ने पहला फाउंटेन कलम विकसित किया। इसके खोखले हिस्से में स्याही भरकर लिखने का काम करते थे। इस दौरान क्विल पेनों का भी व्यापक रूप से इस्तेमाल किया जाता था । 1787 में संयुक्त राज्य अमेरिका के संविधान को लिखने और हस्ताक्षर करने के लिए इसी कलम का उपयोग किया गया था। परन्तु क्विल कलम को 19 वीं शताब्दी में धातु की निब वाले फाउंटेन कलम से में बदल दिया गया। और 19 शताब्दी के अंत में बॉल पॉइंट पेन (ball point pen) ने कलम के इतिहास में अपनी पहचान बनाई । कलम के इतिहास में द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद कई कंपनियां चाहती थी कि वे अपना खुद का बॉल पॉइंट पेन को व्यवसायिक रूप दें इस मिशन का प्रयास 1940 के दशक में किया गया था, जब एबरहार्ड फैबर पेंसिल फैक्ट्री (Eberhard faber Pencil factory) ने एवरशार्प कंपनी (Eversharp Company) के साथ मिलकर अमेरिका में विरोम से पेनों की बिक्री के लिए लाइसेंस दिया था। लेकिन अमेरिकी उद्यमी मिल्टन रेनाल्डस ने एबरहार्ड फैबर और एबरशार्प कंपनी को हराकर अमेरिका को अपना बॉल पॉइंट पेन देने के लिए अर्जेटीना की व्यापारिक यात्रा की। उन्होंने वहां से जो पेन लिया, उससे उन्होंनें रेनल्डस इंटरनेशनल पेन कंपनी (Reynolds International Pen company) बनाई । उन्हें एक अमेरिकी पेटेंट मिला और इस प्रकार रेनॉल्ड्स राकेट पहली व्यावसायिक रूप से सफल बॉल पॉइंट पेन बन गया। फिर उसके बाद 1953 में माइकल विच नामक एक और निर्माता बिक पेन (Biz Pens) के साथ मार्केटिंग की गहराई से उभरे और उन्होने बाजार में नये बॉल पेन पेश किए और 1960 के दशक में अपने बिक पेन वेचने में सफल हो गए ।

1940 से 1960 की अवधि, पेन के प्रत्येक निर्माण विनिर्माण के लिए प्रतिस्पर्धी युग था, फिर उसके बाद वर्ष 1962, वह समय था जब मार्कर पेन (Marker pen) का आधुनिक विकास हुआ आधुनिक मार्कर पेन का अविष्कार टोक्यो स्टेशनरी कंपनी के जापानी पुकियो हॉरी ने किया था । कुछ समय बाद 1963 में जापानी कपंनी, ओट्टो द्वारा रोलरबॉज पेन को आम लोगो के लिए पेश किया गया था । 1990 में कंपनी द्वारा कलम के ऊपर रबड का कवर लगाया गया क्योकि जब भी पेन का इस्तेमाल किया जाता था तो उसे पकड़ने में दिक्कत न हो ।

अब आपको पता चल गया होगा कि हमारे पेन का इतिहास कितना पुराना है । औरे किस-किस बदलाव के साथ गुजरा है। हालाकि आज कम्पयूटर, फोन और एड्रॉइड का उपयोग लेखन के अन्य स्रोतों के रूप में किया जाता है । परंतु फिर भी कलम हमारी दुनिया में बना हुआ है और आज भी कलम रोजमर्रा की जिदंगी में इस्तेमाल किए जाते है। पेंसिल को सौ गुनाह माफ है पर पेन पर जिम्मेदारियाँ बहुत है ।

❑❑❑

हीरो और जीरो का देश भारत

अंग्रेजो की चुनौतियों को ललकारने की प्रवृत्ति पर विचार करते समय कलाम का ध्यान भारतीयों की मानसिकता और भारत की दया पर चला गया। वे इस नतीजे पर पहुंचे कि भारतीय लोगों में कुछ ऐसी कमियाँ मौजूद हैं जिनकी वजह से वे एक-दूसरे की प्रगति को सहयोग नहीं दे पाते। नतीजतन देश की समग्र उन्नति नहीं हो पाती। भारत के लोग अपने-अपने अहंकार में रहते हैं और अपनी छोटी-छोटी उपलब्धियों को बडी मानकर अपने आपको बडा आदमी समझने लगते हैं। वे अपने ज्ञान का विस्तार दूसरों में करके खुशी हासिल करने का प्रयास कुछ कम करते हैं। भारत में श्रम-संस्कृति का अभाव हैं। श्रमिक का अपमान और मेहनती लोगों के साथ न्याय न हो पाना इसका प्रमुख कारण हैं। इसलिए कुछ लोग तो बहुत तरक्की कर जाते हैं और शेष लोग कुछ नहीं कर पाते।

अपने इन अहसासों की उन्होंने अपनी आत्मकथा में इस प्रकार अभिव्यक्ति की हैं-'भारतीय संस्थानों में जो चीज सबसे ज्यादा मुश्किलें पैदा करती हैं, वह हैं लोगों में व्याप्त अवज्ञा रुपी अहंकार। इसके रहते हम अपने से छोटों, अपने साथियों व अपने अधीनस्थों की बात नहीं सुनते। अगर आप किसी को अपमानित करते हैं तो आप उससे किसी नतीजे की आशा नहीं कर सकते। अगर आप उन्हें तिरस्कृत करेंगे या उसकी उपेक्षा करेंगे तो आप उससे किसी सृजनात्मकता की उम्मीद नहीं कर सकते। दुर्भाग्यवश आज हमारे देश में सिर्फ 'हिरो' और 'जीरो' हैं जिनके बीच एक बडी विकट विभाजन रेखा हैं। एक तरफ कुछ गिनती के हिरो हैं और दूसरी ओर पंचानवे करोड लोग नीचे की तरफ धकेले हुए पडे हैं। इस स्थिति को बदलना बहुत जरुरी हैं।'

कलाम का यह विश्लेषण इस बात का प्रतीक हैं कि उन्हें देश की समस्याओं की अच्छी समझ भी हैं और उन्हें सुलझाने की चिंता भी। मिसाईल मैन के रुप में विख्यात कलाम अब भारतीय राजनीति के शिखर पर पहुंच चुके हैं। यदि वे अपनी चिंता को सार्थक करना चाहते हैं तो उसके लिए यह सबसे सही समय हैं। हमारे देश का एक दुर्भाग्य यह भी रहा हैं कि महान विचारकों और समझदारों की तो यहाँ कभी कमी नहीं रही, परंतु अपने विचारों को व्यवहार में उतारने वालों की सूची बहुत छोटी हैं।

अमित कुमार सिंह
प्रमुख प्रबंधक (कार्मिक)

एक दिन मैं भी आकाश में उड़ान भरुंगा

डॉक्टर अब्दुल कलाम को आकाश में पक्षियों की उडान बहुत अच्छी लगती थी। उनके घर से रामेश्वरम मंदिर 10 मिनट के रास्ते पर था। वे प्राय: रामेश्वरम जाया करते थे। रामेश्वरम मंदिर के मुख्य पुजारी उनके पिता के मित्र थे। वे दोनों घंटो-घंटो धर्म और अध्ययन पर बातें किया करते थे।

कलाम बडे चाव से मंदिर की सजावट देखते थे, श्रद्धालू भक्तों की तरह सिर झुकाते थे, प्रार्थना-पूजा में भी शामिल होते थे। मंदिर देखने के बाद वे जब समुद्र पर नजर डालते तो उनके मन में सागर जैसी उत्ताल तरंगे उठने लगती थी। सागर के उपर कतारों में उडते सारस उन्हें इतने अच्छे लगते थे कि वे टकटकी लगाए उनमें खो जाते थे। वे सोचा करते थे-समुद्र की कोई थाह नहीं, कोई सीमा नहीं, समुद्र की गहराई और उसके विस्तार से बेखबर ये सारस कितनी मस्ती से कभी एक ताल में पंखों को हिलाते हुए, कभी बिना पंखे हिलाए वायु में तैरते हुए जीवन का आनंद ले रहे हैं।'

एक दिन यह दृश्य देखते-देखते उनके मन में एक विचार आया-क्या मनुष्य पक्षियों की तरह नहीं उड सकता।' तभी एक लहर उनके दिल की गहराई में उठी और पूरे शरीर में सिहरन बनकर दौर गई। कलाम के मुंह से निकला-'एक दिन मैं भी इन पक्षियों की तरह आकाश में उडान भरुंगा।'

फिर अपने ही शब्दों पर वे सोचते रह गए। 'उडान' शब्द से ही उनके मन में खुशी की एक ऐसी लहर दौडी जिसे वे उस समय समझ नहीं पाए थे।

अमित कुमार सिंह
प्रमुख प्रबंधक (कार्मिक)

नया साल नई खुशियाँ लेकर आ रहा है।
पुराना साल यादों को समेटे जा रहा है।।
जो बीत गयी सो बात गयी,
आओ नए परिवर्तन को हम अपनाये।
बीते साल की कड़वी यादों को आओ हम भूल जाये।।
कुछ ठोकरे हमने इस साल है खाये,
कुछ सपने हमारे है टूटे।
जाते-जाते इस साल ने कई भरम है हमारे लूटे ।।
आने वाले नए साल में सपने सच कर जाये।
बीते साल की कड़वी यादों को आओ हम भूल जाए।।
नया साल नई शुरुवात लेकर आ रहा है।
नया साल हमें नई दिशाए दिखा रहा है।।
नए साल में नाचे गाए, आओ सब मुस्कुराये।
बीते साल की कड़वी
यादों को आओ हम भूल जाये।।

संयुक्ता दास
प्रबंधक (कार्मिक)

डी. ए. वी. स्कूल
चिखला के छात्रों की कला

अपने आप को बेहतर बनाने में इतने व्यस्त रहें कि आपके पास दूसरों की आलोचना करने का समय न हो। - चेतन भगत

"परिवार के साथ से खुशहाल होता है जीवन"

रामअवतार देवांगन
महामंत्री, मॉयल कामगार संघटन

आधुनिकता के चकाचौंध में समाज भी बदलता जा रहा है, आज हम उस दौर में खड़े है, जहां इस समाज में तलाक होने का भी फोटो शूट कर के जश्न मनाया जाता है. किसी भी रिश्तों का बिखर जाना अच्छी बात तो नहीं हो सकती है, लेकिन जब हमें रिश्तों में घुटन महसूस होने लगे और मामला संभलने वाला नहीं हो तो उस रिश्ते से निकलना काफी बेहतर हैं। आज के दिनों में ऐसे कई मामले आए है, जिनमें पति-पत्नी के रिश्तों में खटास के बाद समाज के डर से तलाक नहीं ले पाते और सुसाइड तक कि स्थिति आ जाती है, इसीलिए तलाक से किसी की जिंदगी बच जाती है तो तलाक अच्छा भी है और सुकून भी देने वाला होता है । किन्तु यह सुकून क्षणिक होता है और परिवार शब्द समाप्त हो जाता है।

लेकिन ऐसा नही है, कि इससे परिवार की अहमियत कम हो जाती है, किसी भी मनुष्य के जीवन में परिवार का काफी महत्व होता है, परिवार का व्यक्ति के जीवन में उतना ही महत्व होता है, जितना एक मछली के लिए समुद्र का, मनुष्य के लिए परिवार का होना सबसे जरूरी होता है जो उसे संवारे तथा उसके सुख-दु:ख हमेशा उसके साथ रहे. परिवार और उसके प्यार के बिना एक व्यक्ति कभी भी पूरा नहीं हो सकता है, और न ही खुश होता है. एक मनुष्य का शारीरिक, मानसिक और बौध्दिक विकास उसके परिवार में ही होता है, क्योंकि मनुष्य को जिस तरह परिवार में खुशहाली, स्नेह और सुरक्षित वातावरण मिलता है, वह कहीं और मिलना मुश्किल है। कई अध्ययनों में कहा गया है, कि परिवार के साथ समय बिताने से इंसान के बेहतर विकास में मदद मिलती है, और इसका असर उसके बाकी के संबंधों पर भी पड़ता है, यही वजह है, कि अक्सर परिवार के साथ रहने की सलाह दी जाती है. आजकल बच्चों की परिवार से दूरी बनने लगी है, यह समाज के लिए बड़ी समस्या बनती जा रही है।

परिवार के साथ रहने और समय बिताने पर बच्चों को परिवार के मूल्यों और महत्व के बारे में पता चलता है, बच्चों में एक सुरक्षा की भावना रहती है, और उन्हे यह एहसास रहता है, कि उनके अपने उनके साथ है, परिवार के टूटने का एक मुख्य कारण जेनरेशन गैप होता है, जिसे परिवार के साथ समय बिताकर काफी हद तक कम किया जा सकता है, परिवार के बीच रह कर बच्चे बुरी आदतों से भी दूर रहते है।

देश दुनिया में शोध होते रहते हैं। इस तरह से एक शोध के अनुसार देखा गया कि जिन लोगों के माता-पिता और भाई-बहन है, उनका मानसिक स्वास्थ बेहतर होता है. 246 परिवार में माता-पिता और युवा भाई-बहनों पर 2015 में हुए एक अध्ययन में पाया गया कि जिन्होंने अपने माता-पिता और भाई-बहन के साथ अपने रिश्तों को सकारात्मक माना, उनमें डिप्रेशन के लक्षण कम पाए गए। जबकि जो अपने माता-पिता और भाई-बहनों के साथ नहीं थे, वो डिप्रेस्ड थे. अन्य अध्ययनों से यह भी पता चलता है, कि जिन लोगों की माता-पिता और भाई-बहनें है, उनमें अकेलापन, अनमनापन और डर का अहसास भी कम होता है, यानी कि माता-पिता और भाई-बहन का साथ होना कई तरह से फायदेमंद साबित होता है। आज के आधुनिक दौर में बच्चे परिवार से कटने लगे हैं, और परिवार से आजादी मांगने लगे हैं, स्वतंत्रता की सुगंध वास्तव में मनुष्य के मन को गुलाब की खुश्बू की भांति लुभाती है. हालांकि, मनुष्य कभी-कभी भूल जाता है, कि गुलाब भी खुश्बू तभी तक देता है, जब तक वह अपनी जड़ से जुड़ा रहता है, आपको गुलाब की खुश्बू तो तब भी मिल जाती है, जब उसको आप करीब से सूंघते हैं, और तब भी जब आप इसे तोड़कर निकल जाते हैं, किंतु जब गुलाब अपनी टहनी से अलग होता है, तब एक वक्त के बाद वह खुश्बू देना बंद कर देता है।

इसी तरह हमारे जीवन की आजादी भी होती है. आप जब तक अपनों के साथ हैं, तब तक आपको थोड़ी बेड़ियां अवश्य महसूस होती हैं, लेकिन आपको आजादी हमेशा मिलती रहती है. वह बेड़ियां आपके लिए बाधा नही, बल्की परिवार का प्यार और साथ होती हैं. आपको वह कभी मुरझाने नहीं देती हैं. जब तक खुद टूट नही जाती, आपको आजादी देती रहती है, लेकिन ज्यों ही

भक्ति वह है जो ज्ञान को उजागर करती है; और ज्ञान वो है जो आजादी को गढ़ता है। - तुलसीदास

आधुनिकता के चकाचौंध में समाज भी बदलता जा रहा है, आज हम उस दौर में खड़े है, जहां इस समाज में तलाक होने का भी फोटो शूट कर के जश्न मनाया जाता है. किसी भी रिश्तों का बिखर जाना अच्छी बात तो नहीं हो सकती है, लेकिन जब हमें रिश्तों में घुटन महसूस होने लगे और मामला संभलने वाला नहीं हो तो उस रिश्ते से निकलना काफी बेहतर है। आज के दिनों में ऐसे कई मामले आए है, जिनमें पति-पत्नी के रिश्तों में खटास के बाद समाज के डर से तलाक नहीं ले पाते और सुसाइड तक कि स्थिति आ जाती है, इसीलिए तलाक से किसी की जिंदगी बच जाती है तो तलाक अच्छा भी है और सुकून भी देने वाला होता है । किन्तु यह सुकून क्षणिक होता है और परिवार शब्द समाप्त हो जाता है।

लेकिन ऐसा नही है, कि इससे परिवार की अहमियत कम हो जाती है, किसी भी मनुष्य के जीवन में परिवार का काफी महत्व होता है, परिवार का व्यक्ति के जीवन में उतना ही महत्व होता है, जितना एक मछली के लिए समुद्र का, मनुष्य के लिए परिवार का होना सबसे जरूरी होता है जो उसे संवारे तथा उसके सुख-दुःख हमेशा उसके साथ रहे. परिवार और उसके प्यार के बिना एक व्यक्ति कभी भी पूरा नहीं हो सकता है, और न ही खुश होता है. एक मनुष्य का शारीरिक, मानसिक और बौध्दिक विकास उसके परिवार में ही होता है, क्योंकि मनुष्य को जिस तरह परिवार में खुशहाली, स्नेह और सुरक्षित वातावरण मिलता है, वह कहीं और मिलना मुश्किल है। कई अध्ययनों में कहा गया है, कि परिवार के साथ समय बिताने से इंसान के बेहतर विकास में मदद मिलती है, और इसका असर उसके बाकी के संबंधों पर भी पड़ता है, यही वजह है, कि अक्सर परिवार के साथ रहने की सलाह दी जाती है. आजकल बच्चों की परिवार से दूरी बनने लगी है, यह समाज के लिए बड़ी समस्या बनती जा रही है।

मुस्कान

- अनिल घरडे-

सहा. हिंदी अनुवादक

पिता, वो होते हैं जो हमारी मुस्कान के पीछे,
अपनी मुश्किलों को छुपा देते हैं ।
वो हमारे लिए जीते हैं, हमारे लिए मरते हैं,
हमें हर खुशी की तरफ कदम बढ़ा देते हैं ।

पिता, वो होते हैं जो हमारे सपनों को साकार करते,
हमें नई उड़ान भरने का अवसर देते हैं ।
वो हमारे लिए कभी सिर झुकाते नहीं,
लेकिन हमें सब कुछ सिखाने का सही अदब बताते हैं ।

पिता, वो होते हैं जो हमें अपने प्यार से प्यार करते,
हमारे लिए दुनिया के वरदान हो आप ।
आपके बिना जीवन अधूरा सा लगता है,

पिता, वो हमारे लिए खुदा का रूप होते हैं ।
इसलिए, आपके बिना जीवन अधूरा सा लगता है,
उनके प्यार को कभी न भूलें हम,
पिता का साथ हमेशा हमारे साथ होता है,
उनकी ममता, उनका स्नेह हमें सबसे प्यारा होता है ।

मुस्कुराने दो

हवांओं को चलने दो इस कदर
कि पत्ते खिल खिलाने लगे
हमको को भी जिन दो इस कदर
हम भी मुस्कुराने लगे ।
क्यों पीछे पडे हो इस डगर
कि हमें डराने लगे हो
हम तो तुम्हारे जिने का सहारा है
हम क्यों बेसाहरा करने लगे हो
हम तो चले जायेंगे इस कदर
कि हँसते हुए चेहरों पर छाया बनकर
मुस्कुराने दो जिंदगी के रंगों को इस कदर
प्यार की सुबह को फिर से आने दो।

हम सभी के भाग्य को धारण करने की ताकत सितारों के अंदर नहीं होती बल्कि अपने आप में होती है। - विलियम शेक्सपियर

हम हैं पुराने खयाल के

हम हैं पुराने खयाल के
नये दौर के लोग हमें देखते हैं
हिकारत की नजर से
हम हैं पुराने खयाल के
जिसमें माँ बाप के रिश्तों का सम्मान,
छोटे-बड़े का संविधान माना जाता था।
तब चेहरे को कम चरित्र को ज्यादा
देखा जाता था।

हम हैं पुराने खयाल के
जिसमें संयम की परिभाषा
नियमों की मर्यादा सर्वोपरि थी।
हम हैं पुराने खयाल के पोषक अपनी संस्कृति,
संस्कार के ,
परायी स्त्री को मान दिया
अपनी को सम्मान दिया।
बैठ गये बिछौना बिछाकर
तो कभी खुली धरती पर
कभी किसी को अभिमान नहीं बताया
हमारी ही बुनियाद पर खोलें हैं तुमने
अपने नये खयालो के द्वार।
गर हम पुराने नहीं होते, तो तुम नये कहाँ होते?
तुम्हें नया करने के लिए ही
हमने पुराने होने का
खिताब पाया है
और तब ही तुमने
नये होने का सिंहासन पाया है।

दिनेश कनोजे देहाती
वरिष्ठ चार्जहेड (यांत्रिकी)

जीने की कला

अचानक मेरे कार्यालय
के ऊपर नज़र पड़ी।
एक तोते की आनंद भरी,
मस्ती चल रही थी।

उससे अनायास ही पूछ बैठा,

ऐसे आनंदित कैसे रहते हो सदा,
सदियों से सिर्फ 'दाना चुगकर'?
बात सुनकर मेरी,
उसने कुछ कहने की इच्छा जताई।

बोला - रे भला आदमी,
बुद्धि तो मेरे से तुझ में ज्यादा है।
पर इच्छा तेरी 'अपरंपार',
जिससे तेरी 'खुशी' चली गई।

मिला जो,'आनंद' से ले,
इकट्ठा करनें की इच्छा'त्याग दे'।
'संतोष' की रकम संभालकर रख,
देखा-देखी में मत खो।

मन की खलबली कम करके,
वो प्यारा सा तोता
'जीने की कला' सिखाकर उड़ गया।

दिव्येश लिम्बाचिया,
वरिष्ठ सहा. (वित्त)

राजभाषा का सरकारी कार्यालय में महत्व

राजभाषा का सरकारी कार्यालय सरकारी संगठनों और विभागों में भारत की राजभाषा, जो कि वर्णिका अनुच्छेद 343 के तहत है, के प्रति संविधान में प्राधिकृत की गई भाषा के प्रति योजना और निष्पादन का महत्वपूर्ण कार्य करता है। इसका मुख्य उद्देश्य भारत की अधिकांश नागरिकों को उनकी स्वाभाविक भाषा में सार्वजनिक सेवाओं और सुविधाओं का पूरा अधिकार देना है। इसके साथ ही राजभाषा के कार्यालय का कार्य है राजभाषा के प्रति अभिवादन और इसके अधिकारों का पालन करने की प्रक्रिया को सुनिश्चित करना और इसके प्रति जागरूकता फैलाना। राजभाषा का सरकारी कार्यालय सरकारी संगठनों और विभागों में राजभाषा के प्रचार-प्रसार, विकास, और प्रशिक्षण का निर्देशन करने के लिए जिम्मेदार होता है। यह कार्यालय भाषा के सही और प्रभावी उपयोग की सुनिश्चिति के लिए निर्देशित होता है ताकि सरकारी संगठन राजभाषा के प्रति अपने कर्तव्यों का पूर्णत: आचरण कर सके।

राजभाषा के सरकारी कार्यालय का महत्व निम्नलिखित कारणों से होता है :

संविधान में प्राधिकृत भाषा का पालन : सरकारी कार्यालय भारतीय संविधान के अनुच्छेद 343 के तहत निर्धारित भाषा का पूरा पालन करने के लिए जिम्मेदार होते हैं। इसका मकसद भारत के अधिकांश नागरिकों को उनकी मातृभाषा में सरकारी सेवाएं प्राप्त करने का अधिकार देना है।

राष्ट्रीय एकता का साधन : भाषा के माध्यम से राष्ट्रीय एकता बढ़ती है। राजभाषा के कार्यालय के माध्यम से भाषा से संबंधित संघर्षों को समाधान किया जाता है और भाषा के माध्यम से समाज को एक साथ लाने का प्रयास किया जाता है।

सरकारी कार्यों में भाषा का उपयोग : यह कार्यालय सरकारी संगठनों को उनके कार्यों में राजभाषा का उपयोग करने में मदद करता है। इसके जरिए विभिन्न सेक्टरों में स्थापित भाषा के नियमों का पालन किया जाता है।

राजभाषा की सुविधा: यह कार्यालय राजभाषा के संबंध में नीतियों की तरफ से सरकारी विभागों को मार्गदर्शन देता है और भाषा की विकास के लिए योजनाएं तैयार करता है।

राजभाषा के प्रति जागरूकता का प्रचार :
यह कार्यालय राजभाषा के महत्व को समझाने और इसके प्रति जागरूकता फैलाने के लिए अनुसंधान और प्रचार-प्रसार कार्यक्रमों का आयोजन करते हैं।

भाषा का समृद्धि और संरक्षण :
सरकारी कार्यालय राजभाषा की समृद्धि और संरक्षण के लिए काम करते हैं। इसका उद्देश्य होता है कि विभिन्न भाषाओं में सरकारी संवादों और लेखन के माध्यम से सभी नागरिकों को समान अधिकार और सुविधाएं मिलें।

सरकारी संगठनों में राजभाषा के प्रचार-प्रसार :
यह सरकारी कार्यालय सरकारी संगठनों में राजभाषा के प्रचार-प्रसार के लिए योजनाएं बनाते हैं और उनका पालन करते हैं। इसका उद्देश्य होता है सभी कर्मचारियों को राजभाषा का सही तरीके से उपयोग करने में मदद करना।

राजभाषा सुनिश्चिति :
सरकारी कार्यालय राजभाषा सुनिश्चिति की जिम्मेदारी संभालते हैं, जिससे यह सुनिश्चित होता है कि सरकारी दस्तावेज, सार्वजनिक सूचनाएं, और संविधान के मुताबिक सभी सरकारी संगठनों में राजभाषा का प्रयोग हो रहा है।

राजभाषा की स्थिति की निगरानी :
सरकारी कार्यालय राजभाषा की स्थिति की निगरानी रखते हैं और निरीक्षण करते हैं कि सरकारी संगठनों में राजभाषा का पूर्णत: पालन हो रहा है या नहीं।

अनुसंधान और विकास :
राजभाषा के क्षेत्र में अनुसंधान और विकास के लिए सरकारी कार्यालय नई योजनाओं की शुरुआत करते हैं और सरकार को राजभाषा के क्षेत्र में नए उत्थान की संभावनाओं के बारे में सुझाव देतेहैं।

अनिल घरडे
सहा. हिन्दी अनुवादक

❑❑❑

> "*राजभाषा का सरकारी कार्यालय राष्ट्रीय एकता और भाषाई सामंजस्य की दिशा में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है, और यह सुनिश्चित करता है कि सभी नागरिकों के भाषा के प्रति उनके अधिकार का पूरा पालन होता है। राजभाषा का सरकारी कार्यालय सरकारी संगठनों के भाषा के प्रति संविधान में निर्धारित दायित्वों का पालन करता है और भाषा को एक एकत्र रखने और समृद्धि करने का महत्वपूर्ण रोल निभाता है।*"

महिला आरक्षण

समाज में समानता और न्याय के मूल सिद्धांतों के आधार पर, आरक्षण समाज के विभिन्न वर्गों के लोगों को समान अवसरों की पहुंच करने में मदद करने का एक प्रमुख तंत्र है । आरक्षण का उद्देश्य समाज में समानता स्थापित करना है और ऐसे समुदायों को समृद्धि की दिशा में बढ़ने का एक योजना प्रदान करना है । महिलाओं के लिए प्राप्त आरक्षण का समर्पण एक समाज में समानता और न्याय की प्राप्ति की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है । यह आरक्षण विभिन्न क्षेत्रों में महिलाओं को उनके सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक उत्थान के लिए समर्थन प्रदान करता है । महिलाओं के लिए आरक्षण एक ऐसी योजना है जिससे समाज में नारी शक्ति को बढ़ावा मिले और महिलाएं सामाजिक, आर्थिक, और राजनीतिक क्षेत्रों में सक्रिय रूप से शामिल हो सकें । यह एक सामाजिक न्याय की प्रक्रिया है जो समाज में महिलाओं के अधिक समृद्धि और उनकी समाज में बेहतर स्थिति की समर्थन करती है । यहां कुछ महत्पूर्ण पहलुओं पर चर्चा की गई है :

शिक्षा में आरक्षण : शिक्षा महिलाओं के समृद्धि और समाज में उनके पूर्ण प्रतिबद्धता के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है । महिलाओं को उच्च शिक्षा के क्षेत्र में आरक्षित सीटें प्रदान करना, उन्हें समर्थन और स्थिति में सुधार करने में मदद कर सकता है ।

रोजगार में आरक्षण : महिलाओं को नौकरी मिलने में आरक्षण, विभिन्न क्षेत्रों में उनके प्रवेश को बढ़ावा देता है । इससे समृद्धि के क्षेत्रों में महिलाओं की अधिक संख्या शामिल हो सकती है और उन्हें अधिक समानता मिल सकती है ।सशक्तिकरण के लिए, महिलाओं को रोजगार में भी आरक्षित स्थान मिलना सकता है । यह उन्हें आत्मनिर्भर बनाता है और उन्हें समाज में अधिक सक्रिय बननं,का मौका प्रदान करता है ।

राजनीतिक आरक्षण : राजनीतिक प्रणाली में महिलाओं को आरक्षित सीटों के माध्यम से सशक्त करना, उन्हें सार्वभौमिक नेतृत्व में बढ़ावा देता है । यह समाज में महिलाओं की आवाज को बढ़ावा देता है और उन्हें सार्वभौमिक निर्णयों में शामिल होने का अधिकार प्रदान करता है ।

महिलाओं को राजनीतिक क्षेत्र में भी आरक्षित सीटें मिलनी चाहिए ताकि उनकी आवाज समाज में सुनी जा सके और वे समाज में सक्रिय रूप से शामिल हो सकें ।

आर्थिक आरक्षण : महिलाओं को आर्थिक आरक्षण के माध्यम से उद्यमिता के क्षेत्र में समर्थन प्रदान करना, उन्हें विभिन्न उद्योगों और व्यापारों में सक्रिय भूमिका में लाने में मदद कर सकता है ।

समाज में बदलाव : महिलाओं के लिए आरक्षण से यह भी हो सकता है कि समाज में सामाजिक मानवाधिकारऔरसमानता के प्रति जागरूकता बढती है ।

सुरक्षा : महिलाओं को सुरक्षा के क्षेत्र में आरक्षण का अधिकार होना चाहिए, जैसे कि उनकी हिफाजत के लिए विशेष पुलिस बल या महिला सशक्तिकरण केंद्र ।

महिलाओं का प्राप्त आरक्षण समाज में सामाजिक समानता की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है । यह समाज में समृद्धि और समानता की भावना को मजबूत करता है और महिलाओं को उनके समाज में अधिक सक्रिय भूमिका निभाने का मौका प्रदान करता है । इससे समृद्धि की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम बढ़ाता है और समाज को एक सशक्त, समानिकृत और न्यायपूर्ण समाज की दिशा में अग्रसर करता है । महिलाओं के प्राप्त आरक्षण का उद्देश्य महिलाओं के समर्थन, सशक्तिकरण, और समाज में उनके समान हिस्सेदारी को बढ़ावा देना है । इसके परिणाम स्वरूप, समाज में महिलाओं की भूमिका महत्वपूर्ण रूप से मजबूत होगी और समृद्धि की दिशा में मदद करेगी।

अफरोज अख्तर
सहा. सह. टंकक (का.एव.प्र.)

हमेशा याद रहे कि सफल होने के लिए आपका अपना संकल्प किसी दूसरे से ज्यादा जरूरी होना चाहिए। – अब्राहम लिंकन

सत्य की महिमा

सुखराम ब्रम्हे
(भंडार सह सामग्री सहायक)

एक बार ग्वालों ने गोचर-भूमि और जल की सुविधा देखकर सरस्वती नदी के आस-पास डेरा डाल दिया। उनके पास गायों का एक बहुत बड़ा झुंड था। उन्होंने गायों के रहने के लिये बाड़ लगा दी और अपने लिये घर बना लिये। ग्वाले चारों और गायों की रक्षा करते थे। गायें भी घास पाकर बहुत प्रसन्न थीं। उन गायों के झुंड में एक ह्रष्ट-पुष्ट गाय थी, जिसका नाम नन्दा था।

वह सदा प्रसन्न रहती थी और सब गौओं के आगे निर्भय होकर चला करती थी। एक दिन वह झुंड से बिछुड़ गयी और वहाँ पहुँच गयी, जहाँ एक भयंकर बाघ मुँह बाये बैठा था। बाघ गरजते हुए नन्दा पर टूट पड़ा। बेचारी नन्दा की सिट्टी-पिट्टी गुम हो गयी। उसे अपना नन्हा बछड़ा याद आने लगा। उसकी आँखों से आँसुओं की धारा बह चली।

बाघ बोला-'मालूम पड़ता है कि तुम्हारी आयु समाप्त हो गयी है। तभी तो तुम मेरे पास अपने-आप आयी हो। फिर शोक क्यों कर रही हो?' नन्दा ने बाघ को प्रणाम किया और कहा-'मेरा अपराध क्षमा करो, मुझे अपने जीवन का शोक नहीं है। मैं अपने बच्चे के लिये शोक कर रही हूँ वह अभी बहुत छोटा है। पहली ब्यान का बच्चा होने के कारण वह मुझे प्राणों से भी बढ़कर प्यारा है।अभी वह घास भी नहीं सूँघता, मेरे न रहने पर उसकी क्या दशा होगी? मैं उसे दूध पिलाना चाहती हूँ और उसका मस्तक चाटना चाहती हूँ। यदि तुम मुझे थोड़ी देर के लिये छोड़ दो तो मैं बछड़े को प्यार कर और उसे हिता-हित का उपदेश देकर लौट आऊँगी। उसके बाद तुम मुझे खा जाना।'

बाघ नन्दा की बात अनसुनी कर दी तब नन्दा ने बहुत-बहुत शपथें खायीं। शपथों का प्रभाव बाघ पर पड़ा। उसने नन्दा को लौट जाने दिया। नन्दा उतावली के साथ बछड़े की ओर बढ़ी दूर से ही उसने अपने बछड़े की पुकार सुनी। अब उसकी उतावली और बढ़ गयी। वह दौड़ती हुई बछड़े के पास जा पहुँची। उसकी आँखों के आँसू और जोर से बहने लगे थे। बछड़े ने पूछा-'माँ! तुम तो सदा प्रसन्न रहती थी। आज इस तरह क्यों रो रही हो। 'नन्दा ने आप बीती कह सुनायी और अंत में कहा-'वत्स! मुझे दु:ख इसलिये हो रहा है कि अब मैं तुम्हें देख न सकूँगी। मैं बाघ को शपथ देकर आयी हूँ, अत: सत्य की रक्षा के लिये मुझे उसके पास जाना ही होगा।'

बछड़े ने कहा-'माँ! तुम्हारे साथ मैं भी चलूँगा। यदि बाघ मुझे मार डालेगा तो मुझे वह उत्तम गति मिलेगी जो मातृ-भक्त पुत्रों को मिला करती है ' नन्दा ने बेटे को ऐसा करने से मना किया। उसके बाद नन्दा ने पुत्र को संसार में रहने के बहुत-से ढंग बताये

नन्दा ने बाघ से कहा-'मैं सत्य धर्म का पालन करती हुई तुम्हारे पास आ गयी हूँ। अब तुम मेरे मांस को खाकर अपनी इच्छा पूरी कर लो।' बाघ नन्दा की सत्य निष्ठा को देख कर आश्चर्य चकित हो गया। उसने कहा-'तुम्हारी शपथ सुनकर मैं इस कौतूहल में पड़ गया था कि यह जाकर लौटेगी या नहीं! सत्य की परीक्षा के लिये ही मैंने तुम्हें भेजा था। मैं तुम्हारे भीतर सत्य की खोज कर रहा था, उसे पा लिया।

जीवन में एकमात्र वास्तविक विफलता वह है कि जो सबसे अच्छे से जानता है उसके लिए वो सच नहीं है। - बुद्ध

और धर्म पर अटल रहने पर जोर दिया पुत्र को प्यार देने के बाद नन्दा अपनी माता, साथियों और गोप-गोपियों का अभिनन्दन किया तथा बाघ के पास लौटने का अपना निश्चय सुनाया। उन लोगों को नन्दा का निश्चय पसंद नहीं आया। उन्होंने कहा कि अपनी रक्षा के लिये शपथ और सत्य की दुहाई देना कर्तव्य होता है, अत: तुम मत जाओ, किंतु सत्य वादिनी नन्दाने कहा कि 'दूसरे के प्राणों को बचाने के लिये झूठ बोलना पाप नहीं हैं, किंतु अपने बचाव के लिये झूठ बोलना पाप है। मैं सत्य की रक्षा चाहती हूँ क्योंकि सत्य ही उत्तम तप है।'

सत्यवादिनी नंदा ने सबको अनुनय-विनय से मानकर बाघ के पास पहुँची ठीक इसी अवसर पर मातृ-भक्त बछड़ा भी अपनी पूँछ उठाये दौड़ता हुआ आकर बाघ और अपने माँ के बीच में खड़ा हो

गया, मानो वह बाघ से प्रार्थना कर रहा हो कि 'तुम मुझे ही खा लो और मेरी माँ को छोड़ दो।'

नन्दा ने बाघ से कहा-'मैं सत्य धर्म का पालन करती हुई तुम्हारे पास आ गयी हूँ। अब तुम मेरे मांस को खाकर अपनी इच्छा पूरी कर लो।' बाघ नन्दा की सत्य निष्ठा को देख कर आश्चर्य चकित हो गया। उसनेकहा-'तुम्हारी शपथ सुनकर मैं इस कौतूहल में पड गया था कि यह जाकर लौटेगी या नहीं! सत्य की परीक्षा के लिये ही मैंने तुम्हें भेजा था। मैं तुम्हारे भीतर सत्य की खोज कर रहा था, उसे पा लिया। आज से तुम मेरी बहन हुई और यह बछड़ा हमारा भान्जा। तुम्हारी सत्यनिष्ठा से मैं बहुत प्रसन्न हूँ और तुम्हारा स्वागत करता हूँ। तुम्हारी धर्मनिष्ठा ने मेरी भी जीवन को बदल दिया है। अब मैं भी हिंसा वृत्ति छोड़कर धर्म को अपनाऊँगा। बहन! अब मुझे धर्म का उपदेश दो।' नंदा ने उससे सभी प्राणियों को अभय दान देने के लिये कहा क्योंकि जो लोगों को अभयदान देता है, वह सभी भयों से मुक्त पर ब्रह्म को प्राप्त हो जाता है। नन्दा की संगति से बाघ को अपने पूर्व जन्म का वृतान्त स्मरण हो आया। उसने कहा-'बहन! पूर्व जन्म में मै राजा था। एक बार इसी वन में शिकार करने आया, तब मुझसे एक अधर्म हो गया मैंने बच्चे को दूध पिलाती हुई एक मृगा को मार दिया। उसी के शाप से मैं बाघ बन गया हूँ बाघ बन जाने के पश्चात् मैं बिलकुल भूल गया था कि मैं राजा हूँ। यह तुम्हारी संगति का ही प्रताप है कि मुझे अपने पूर्वजन्म की बातें स्मरण हो आयीं। तुम धन्य हो और तुम्हारी संगति धन्य है। अच्छा, अब तुम अपना नाम बताकर मुझे तार्थ करो। 'नंदा ने अपना नाम बताया। नाम सुनते ही बाघ का शरीर छुट गया और वह राजा के तेजस्वी रूप में आ गया। ठीक उसी समय नन्दा के सत्य से आकृष्ट होकर धर्मराज वहाँ प्रकट हो गये। उन्होंने प्रसन्नता के साथ कहा-'नन्दा! तुम्हारी धर्म निष्ठा से मैं संतुष्ट हूँ। तुम मुझसे वर माँग लो।' नन्दा ने धर्मराज से तीन वर माँगे-(1) मैं पुत्र के साथ उत्तम पड़ को पाऊँ,(मैं अपने पुत्र के साथ उत्तम शिक्षा, संस्कार, और सफलता की प्राप्ति) (2) यह स्थान तीर्थ बन जाय और (3) यहाँ सरस्वती-नदी का नाम मेरे नाम से 'नन्दा' पड़ जाय। धर्मराज 'ऐसा ही होगा' कह कर उसे संतुष्ट किया। इसके बाद नन्दा तत्काल पुत्र के साथ उत्तम लोक में चली गयी।

उपलब्धि

कु. अदिति अशोक चौहान

कु. अदिति अशोक चौहान ने महाराष्ट्र स्वास्थ्य विज्ञान विश्वविद्यालय, नासिक द्वारा आयोजित मार्च-2023 में, एम.बी.बी.एस. की अंतिम वर्ष की परीक्षा 69.38 प्रतिशत के साथ उत्तीर्ण की है।

कु. अदिति अशोक चौहान, मॉयल लिमिटेड, मनसर खान में कार्यरत् श्री अशोक मारोती चौहान, एम.सी.ओ. (फीटर) की पुत्री है।

मॉयल परिवार कु. अदिति अशोक चौहान के उज्वल भविष्य की कामना करता है।

जीवन में सफल होने के लिए आपको दो चीजों की जरूरत होती है, आत्मविश्वास और अनदेखा करना - मार्क ट्वेन

नारी शक्ति और सामाजिक संरचना

“ नारी शक्ति और सामाजिक संरचना एक-दूसरे से अभिन्न नहीं हो सकती । समाज की सही संरचना, जिसमें सभी वर्गों और लिंगों को समाहित किया जाए, ही सच्चे समृद्धि की दिशा में काम कर सकती है । नारी शक्ति इस समृद्धि की अभिव्यक्ति का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है । ”

सशक्तिकरण के लिए विभिन्न कार्यक्रमों और योजनाओं की आवश्यकता है जो महिलाओं कोआत्म-निर्भर बनाती है और उन्हें उपने अधिकारों का पूरी तरह से उपयोग करने की क्षमता प्रदान करती है । नारी शक्ति और सामाजिक संरचना के इन पहलुओं का साथ देने से, समाज समृद्धि, सामाजिक समानता, और सामाजिक प्रगति की दिशा में अग्रसर हो सकता है । नारी शक्ति को बढावा देने और सामाजिक संरचना को सुधारने के माध्यम से, हम एक औरतों के लिए समृद्ध और समाजवादी समाज की ओर कदम बढा सकते है ।

नारी शक्ति का महत्व : नारी शक्ति समाज के विकास में अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। एक समृद्धि मुक्त और समान समाज की नींव पर निर्मित हो सकती है जिसमें पुरूष और महिलाएं बराबरी के साथ रह सकती है । नारी शक्ति से समाज की सकारात्मक दिशा में प्रवृति हो सकती है ।

नारी शक्ति और सामाजिक संरचना : सामाजिक संरचना में नारी शक्ति का महत्वपूर्ण स्थान है । एक समृद्धि में, महिलाएँ न केवल घर के बाहर, बल्कि अपने घर के भीतर भी सक्रिय रूप से शामिल होती हैं । एक समृद्धि में समाज को महसूस होता है कि नारी शक्ति का समर्थन करना और बढावा देना उसकी समृद्धि की रहा है ।

सामाजिक संरचना और नारी शक्ति : सामाजिक संरचना की बेहतरीन बनाने के लिए, महिलाओं को समाज में सही से शामिल किया जाना चाहिए । वे समाज के निर्माण में अपनी साक्षमता का सही तरीके से उपयोग कर सकती है और समाज के साथी के रूप में योगदान कर सकती है ।

नारी शक्ति के उत्थान के लिए कदमः

शिक्षा : शिक्षा एक महत्वपूर्ण साधना है जो महिलाओं को नारी शक्ति का एक मजबूत स्त्रोत प्रदान करती है । शिक्षित महिलाएं समाज में सक्रिय भूमिका निभा सकती है और अपने अधिकारों को समझ सकती है ।

रोजगारः समृद्धि के माध्यम से महिलाओं को समाज में रोजगार के अधिक अवसर मिलते है । यह महिलाओं को आर्थिक रूप से स्वतंत्र बनाता है और उन्हें नारी शक्ति का अहसास कराता है ।

सामाजिक जागरूकता : समाज में नारी शक्ति को बढावा देने के लिए सामाजिक जागरूकता बढाना महत्वपूर्ण है । लोगों को महिलाओं के साथ बराबरी और समानता की महत्वपूर्णता का आदान-प्रदान करना चाहिए ।

नीता गुजर
(सहा. सह. टंकक)

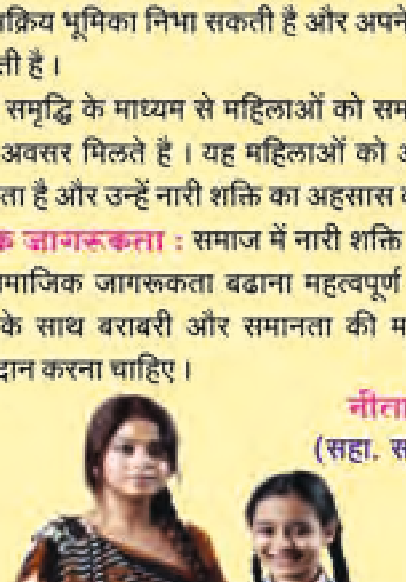

कला सौंदर्य के माध्यम से दिया गया सत्य है। - महादेवी वर्मा

नशे के कारण बदलती तस्वीर

> "नशा, जैसे कि शराब, गाँजा, अफीम, और ड्रग्स का सेवन, समाज में एक गंभीर समस्या है जिसका असर कामगारों पर भी पड़ता है। यह समस्या न केवल उनके व्यक्तिगत जीवन पर प्रभाव डालती है, बल्कि उनके परिवार और समाज पर भी प्रभाव डालती है।"

नशे का सेवन एक समस्या की जड़ में बदल चुका है और इसका सीधा असर कामगार समुदाय पर हो रहा हैं। यह समस्या न केवल शोषण की ओर बढ़ती है, बल्कि समृद्धि की पथ पर रुकावट डालती है और समाज में विभिन्न स्तरों पर उलझाव पैदा करती है। इस लेख में, हम नशे के कारण कामगारों में अनुपस्थिती की समस्या पर चर्चा करेंगे और इसके संभावित प्रभावों को विचार करेंगें।

कार्यपूर्ति में गिरावट : नशे का सेवन कामगारों की कार्यपूर्ति को गिरा सकता है। वे नशे के असर में काम करने में असमर्थ होते हैं, जिससे काम की गुणवत्ता कम होती है और कार्यक्षमता में कमी होती हैं।

रोग और स्वास्थ्य समस्याएँ : नशा सेवन से कामगारों को विभिन्न स्वास्थ्य समस्याएँ हो सकती हैं, जैसे कि किडनी, फेफड़ों, और मानसिक स्वास्थ्य समस्याएँ। इसके परिणाम स्वरूप, उनकी कामकाज में अनुपस्थिती हो सकती हैं।

अनियमित उपभोग की त्रासदी : नशे के सेवन से कामगारों को आर्थिक तंगी का सामना करना पड़ सकता है, क्योंकि उनके पास नशे के लिए धन की बर्बादी का खतरा होता है।

स्वास्थ्य समस्याएं : नशे का सेवन कामगारों के स्वास्थ्य को बहुतंत्र में प्रभावित करता है। धूप, शराब, और अन्य मादक पदार्थों का अधिक सेवन से सार्वजनिक स्वास्थ्य की स्थिति बिगड़ जाती है, जिससे कामगारों की क्षमता में कमी और बीमारियों का बढ़ता खतरा होता है। काम की अस्थिरता: नशे के सेवन से कामगारों का पेशेवर जीवन पर बुरा असर पड़ता है। लेन-देन, अनियमितता, और उत्साह की कमी के कारण काम स्थायिता में कमी होती है और इससे नुकसान होता हैं।

परिवार की अस्थिरता: नशे के कारण कामगारों के परिवार को भी प्रभावित किया जाता है। आर्थिक तंगी, शिक्षा के अभाव, और सामाजिक समस्या इसके साथ आती हैं, जिससे घरेलू माहौल और बच्चों का अच्छा पालन-पोषण प्रभावित होता हैं।

कार्य क्षमता में कमी : नशे के कारण कामगारों में कार्य क्षमता में कमी होती है, जिससे काम की भावना कम होती है और कर्मचारियों की उत्सुकता में कमी आती है।

सामाजिक समस्याए : नशे के कारण कामगारों को समाज में सामाजिक असमानता का सामना करना पड़ता है। इससे उन्हें समाज में स्वीकृति की कमी होती है और वे अपने परिवार और समुदाय के लिए एक नकारात्मक प्रतिष्ठा में बदल जाते हैं।

समाज में ओहदा की कमी : नशे के कारण कामगारों की समाज में ओहदा कम हो जाती है, जिससे उन्हें समाज में विकसित होने में कठिनाईयाँ उत्पन्न होती हैं और उन्हें समाज में सम्मान मिलने में कठिनाई होती है। नशे के कारण कामगारों में अनुपस्थिति की समस्या न केवल उनके व्यक्तिगत जीवन को प्रभावित करती है, बल्कि यह समाज और अर्थव्यवस्था को भी प्रभावित करती है। समाज और सरकार को समस्या का समाधान ढूंढने में मिलकर काम करना होगा, जिससे कामगारों की स्थिति में सुधार हो सके।

सोनू बासनिक
(कुक)

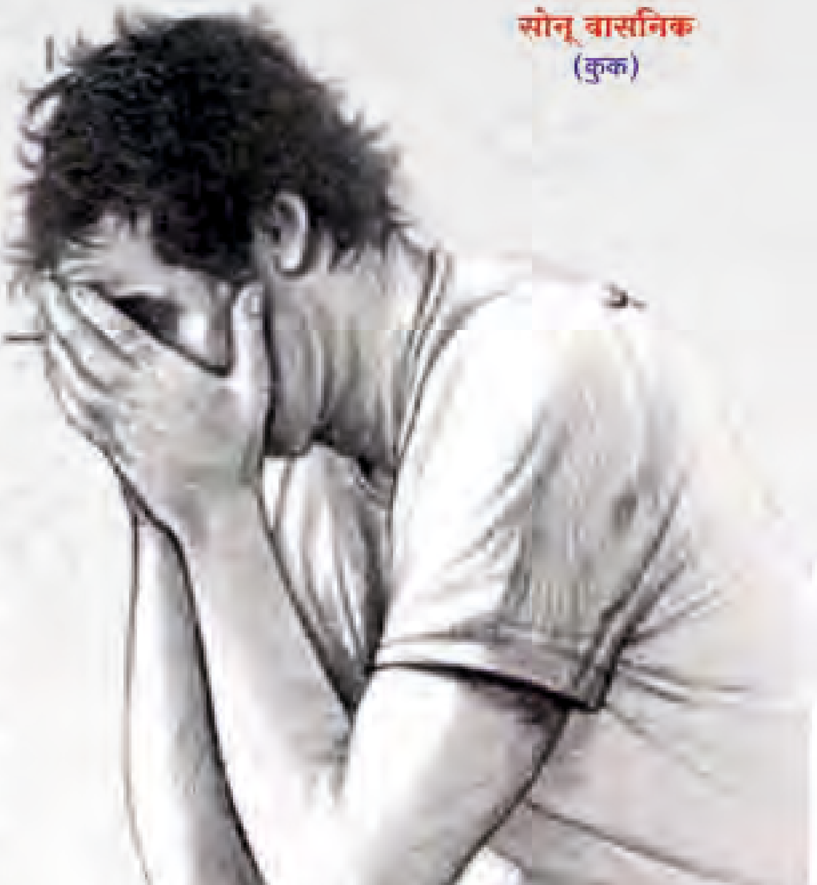

रेत पर लिखा–पत्थर पर लिखा

एक दिन दो दोस्त राहुल और केशव बातें करते हुए जा रहे थे, हालाँकि वो दोनों पक्के दोस्त थे पर अचानक किसी बहस में पड़ गए और कहा सुनी में राहुल ने केशव को थप्पड़ मार दिया । थप्पड़ लगने के बाद केशव ने कुछ नहीं कहा बस नीचे पड़ी रेत पर लिख दिया, ''मुझे चोट लगी है क्योंकि आज मेरे दोस्त ने मुझे थप्पड़ मारा है ।'' दो दिन बाद दोनों दोस्त फिर मिले और इस बार उन्होंने नदी में नहाने जाने का प्रोग्राम बनाया । अगली सुबह दोनों नदी में नहाने पहुंचे । तो जब वो नहा रहे थे तो केशव का पैर फिसला और वो डूबने लगा । जब राहुल ने उसे डूबता देखा तो झट से उसे बचाने के प्रयास में लग गया और उसे बचा लिया । बचाए जाने के बाद, केशव ने पत्थर पर लिखना शुरू किया''आज मुझे मेरे सबसे अच्छे दोस्त ने बचाया'' राहुल ने केशव से पूछा जब मैंने तुम्हें थप्पड़ मारा तो तुमने रेत पर लिखा और जब मैंने तुम्हें बचाया तो तुमने पत्थर पर लिखा, ऐसा क्यों ?'' इस पर केशव ने जवाब दिया''जब लगे की दोस्त से कोई गलती हुई है, उसने हमें कोई चोट पहुंचाई है या हमें किसी बात का बुरा लगे तो अच्छा होगा कि हम रेत पर लिख दें,क्योंकि यह हवा के साथ मिट जाएगा लेकिन जब आपका दोस्त आप के साथ कुछ अच्छा करे तो हमेशा पत्थर पर लिखें ताकि इसे हमेशा याद रखा जा सके।

कहानी से सीख

दोस्तों, जहाँ दोस्ती होती है प्यार होता है वहां थोड़ी बहुत बहस, लड़ाई भी होती है । यदि उस एक बात को हम अपने दिल पर लगा लें तो फिर दोस्ती या कोई भी रिश्ता कैसे चल पायेगा । एक दोस्त आप से लड़ भी सकता है और आपके लिए लड़ भी सकता है । एक तरह आप उसकी गलती को नजरअंदाज करें तो दूसरी तरह उसकी अच्छाई को हमेशा याद भी रखें।

–संदीप देवांगन–
(सहा. सह टंकक)

सच्चीदोस्ती

दोस्त ने दिया दर्द, इस कदर,
की नाम तेरा रेत पर लिख दिया,
डुबता देख कर, तुने किया एहसान इस कदर,
की नाम तेरा पत्थर पर लिख दिया,
हवा के साथ मिट जायेगा, दर्द, जैसे,
लिखा तेरा नाम रेत पर,
सच्ची दोस्ती का प्यार है, दोस्त,
नाम तेरा पत्थर पर, अमर हो जायेगा।

–अनिल घरडे–
सहा. हिंदी अनुवादक

हम में से कोई भी स्वतंत्रता प्राप्त करने के लायक नहीं है अगर हममें हमारी गलतियाँ करने की स्वतंत्रता शामिल नहीं है। – महात्मा गांधी

निर्णय लेना

सोचो, तय करो तथा जिसे सही समझते हो, उसे करो ।

निर्णय लेना सभी स्तर के प्रबंधन कार्यों की कुंजी है तथा योजना-प्रक्रिया का अविच्छिन्न भाग है। असल में यह उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु समस्याओं के निदान के लिए विभिन्न विकल्पों से सबसे अच्छे विकल्प को चुनने की एक कला है। ऐसा निर्णय - जो परिस्थिति की तकाजा के अनुरूप होता है, - सभी के लिये मान्य होता है और कार्यान्वित किया जा सकता है।

निर्णय दो प्रकार के हैं (अ) योजनानुसार तथा (ब) बिना योजना के । योजनानुसार लिए गए निर्णय वे हैं जो किसी नीति नियम या क्रियाविधि के अनुरूप है। बिना योजना वाले निर्णय वें है जो सामान्य न होकर अनुठे हो तथा जिन्हें अपवाद एवं विषम परिस्थितियों में लिया जाये । सच तो यह है कि बिना योजना वाले निर्णय वास्तविक चुनोतियों से भरे होते हैं । कोई भी निर्णय लेने में निम्नलिखित बातें सहायक होती हैं ज्ञान, अनुभव, विश्लेषण, अंतर्बोध, एवं सूचनाएं ।

निर्णय लेने के लिए अपनाई गई प्रक्रिया निम्नलिखित हैं

(1) समस्याओं को निरूपित करना तथा परिभाषित करना

(2) सम्बन्धित तथ्यों को एकत्रित करना तथा उनका विश्लेषण करना ।

(3) विकल्प विकसित करना ।

(4) विकल्पों का मूल्यांकन करना ।

(5) सर्वोत्तम विकल्प का चुनाव करना ।

(6) निर्णय के सम्भावित प्रतिफल का विश्लेषण करना तथा

(7) लिए गए निर्णय को कार्यान्वित करना।

आगे से सोचकर समय रहते ही निर्णय लेना अत्यावश्यक हैं, ताकि परिणाम अनर्थकारी न हों । पंचतंत्र व्यावहारिक बुद्धि का एक श्रेष्ठ साहित्य हैं। उसमें पहले से विचार कर तथा समस्या के उत्पन्न होने पर तुरुन्त स्फूर्ति से काम करने का सटीक उदाहरण उपलब्ध है।

किसी सरोवर में,' अनागत विधाता' 'प्रत्युत्पन्नमति' और 'यद्‌भविष्य' नाम की तीन मछलियां रहा करती थीं। एक बार ऐसा हुआ कि पास से गुजरते हुए मछुआरों ने कहा- इस तालाब में बहुत सारी मछलियाँ हैं, हम लोग कल इन्हें पकड़ेंगे । यह सुनकर अनागत विधाता ने अपने अन्य दोनों दोस्तों को अपने साथ किसी दुसरे तालाब में शरण लेने के लिए कहा । प्रत्युत्पन्नमति ने कहा यदि मछुआरे आते हैं, तो परिस्थितियों के अनुसार किसी न किसी प्रकार में अपनी रक्षा कर लूंगी । यद्भविष्य ने भी उसकी एक न सुनी। यह देखकर कि उसके दोनों मित्र उसी तालाब में रहना चाहते थे, अनागत विधाता दूसरे तालाब में चला गया । दूसरे दिन मछुवारे आए जाल फेंका तथा दोनों को पकड लिया । किन्तु प्रत्युत्पन्नमति मृत मछली का नाटक कर निर्जीव रूप में पडी रही । मछुवारों ने सोचा यह मछली पहले ही मर चुकी है, अत: जाल से निकालकर तालाब के पानी के किनारे रख दिया । वह जल्दी से पानी में कूद गई तथा दूसरे तालाब में भाग गई ।

उज्वला राजेश वानखेडे
वरिष्ठ सहायक (का. एवं प्र.)

 हम अपने गुस्से पर काबू क्यों नहीं रख पाते? क्योंकि हम पूर्णता से प्यार करते हैं। अपने जीवन में अपूर्णता के लिए थोड़ी जगह बनाओ। - श्री श्री रविशंकर

एक टोकरी भर मिट्टी

भारती रमेश पिम्प्ले
वरिष्ठ आशुलिपीक

किसी श्रीमान् जमींदार के महल के पास एक गरीब अनाथ विधवा की झोंपड़ी थी। जमींदार साहब को अपने महल का हाता उस झोंपड़ी तक बढ़ाने की इच्छा हुई, विधवा से बहुतेरा कहा कि अपनी झोंपड़ी हटा ले, पर वह तो कई जमाने से वहीं बसी थी; उसका प्रिय पति और इकलौता पुत्र भी उसी झोंपड़ी में मर गया था।

पतोहू भी एक पाँच बरस की कन्या को छोड़कर चल बसी थी। अब यही उसकी पोती इस वृद्धाकाल में एकमात्र आधार थी। जब उसे अपनी पूर्वस्थिति की याद आ जाती तो मारे दुःख के फूट-फूट रोने लगती थी। और जबसे उसने अपने श्रीमान् पड़ोसी की इच्छा का हाल सुना, तब से वह मृतप्राय हो गई थी।

उस झोंपड़ी में उसका मन लग गया था कि बिना मरे वहाँ से वह निकलना नहीं चाहती थी। श्रीमान् के सब प्रयत्न निष्फल हुए, तब वे अपनी जमींदारी चाल चलने लगे। बाल की खाल निकालने वाले वकीलों की थैली गरम कर उन्होंने अदालत से झोंपड़ी पर अपना कब्जा करा लिया और विधवा को वहाँ से निकाल दिया। बिचारी अनाथ तो थी ही, पास-पड़ोस में कहीं जाकर रहने लगी।

एक दिन श्रीमान् उस झोंपड़ी के आसपास टहल रहे थे और लोगों को काम बतला रहे थे कि वह विधवा हाथ में एक टोकरी लेकर वहाँ पहुँची। श्रीमान् ने उसको देखते ही अपने नौकरों से कहा कि उसे यहाँ से हटा दो। पर वह गिड़गिड़ाकर बोली, ''महाराज, अब तो यह झोंपड़ी तुम्हारी ही हो गई है। मैं उसे लेने नहीं आई हूँ। महाराज क्षमा करें तो एक विनती है।'' जमींदार साहब के सिर हिलाने पर उसने कहा, ''जब से यह झोंपड़ी छूटी है, तब से मेरी पोती ने खाना-पीना छोड़ दिया है। मैंने बहुत-कुछ समझाया पर वह एक नहीं मानती। यही कहा करती है कि अपने घर चल। वहीं रोटी खाऊँगी।

अब मैंने यह सोचा कि इस झोंपड़ी में से एक टोकरी-भर मिट्टी लेकर उसी का चूल्हा बनाकर रोटी पकाऊँगी। इससे भरोसा है कि वह रोटी खाने लगेगी। महाराज कृपा करके आज्ञा दीजिए तो इस टोकरी में मिट्टी ले आऊँ!'' श्रीमान् ने आज्ञा दे दी।

विधवा झोंपड़ी के भीतर गई। वहाँ जाते ही उसे पुरानी बातों का स्मरण हुआ और उसकी आँखों से आँसू की धारा बहने लगी।

अपने आंतरिक दुःख को किसी तरह सँभालकर उसने अपनी टोकरी मिट्टी से भर ली और हाथ से उठाकर बाहर ले आई। फिर हाथ जोड़कर श्रीमान् से प्रार्थना करने लगी, ''महाराज, कृपा करके इस टोकरी को जरा हाथ लगाइए जिससे कि मैं उसे अपने सिर पर धर लूँ।'' जमींदार साहब पहले तो बहुत नाराज हुए। पर जब वह बार-बार हाथ जोड़ने लगी और पैरों पर गिरने लगी तो उनके मन में कुछ दया आ गई।

किसी नौकर से न कहकर आप ही स्वयं टोकरी उठाने आगे बढ़े। ज्योंही टोकरी को हाथ लगाकर ऊपर उठाने लगे त्योंही देखा कि यह काम उनकी शक्ति के बाहर है। फिर तो उन्होंने अपनी सब ताकत लगाकर टोकरी को उठाना चाहा, पर जिस स्थान पर टोकरी रखी थी, वहाँ से वह एक हाथ भी ऊँची न हुई। वह लज्जित होकर कहने लगे, ''नहीं, यह टोकरी हमसे न उठाई जाएगी।''

यह सुनकर विधवा ने कहा, ''महाराज, नाराज न हों, आपसे एक टोकरी-भर मिट्टी नहीं उठाई जाती और इस झोंपड़ी में तो हजारों टोकरियाँ मिट्टी पड़ी है। उसका भार आप जन्म-भर क्यों कर उठा सकेंगे? आप ही इस बात पर विचार कीजिए।

जमींदार साहब धन-मद से गर्वित हो अपना कर्तव्य भूल गए थे पर विधवा के उपर्युक्त वचन सुनते ही उनकी आँखें खुल गयीं। कृतकर्म का पश्चाताप कर उन्होंने विधवा से क्षमा माँगी और उसकी झोंपड़ी वापिस दे दी।

❑❑❑

प्यार की भूख को दूर करना रोटी की भूख से कहीं अधिक कठिन है। – मदर टेरेसा

पर्यावरण

शैलेश भिवगडे
वरि. आशुलिपिक

पर्यावरण एक वह सुरक्षा कवच है, जिसके अंतर्गत सभी जीव-जंतु पेड-पौधे, सजीव-निर्जीव आते हैं। यह एक ऐसा वातावरण निर्माण करता है जिसमे सबका जीवन शामिल होता है।

जिस प्रकार पर्यावरण मनुष्य के लिए महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है जिससे वह उन्नती कर सके उसी प्रकार एक स्वच्छ सुरक्षित पर्यावरण भी मानवीय क्रियाओं पर निर्भर करता है।

पृथ्वी पर जीवन का अस्तित्व इसलिए है, क्योंकि यहाँ पर जीवन जीने के लिए वातावरण मौजूद है। सौरमंडल में कोई और ग्रह नहीं है जहाँ जीवन जी सके । पृथ्वी ही एकमात्र ग्रह है जहा पर करोडो जिवित प्रजातीयाँ रहती है और सभी को जीने के हिए यहा भोजन, हवा और पानी मिलता है।

हर व्यक्ति का यह कर्तव्य होना चाहिये कि वह पर्यावरण की रक्षा करें और किसी भी प्रकार की हानि से पर्यावरण को बचाने की कोशिश करे।

पर्यावरण का प्रदूषण एक अभिशाप है जो मनुष्य और जीव जंतु का विनाश का कारण बन सकती है। आज भी पृथ्वी का वातावरण ऐसा है कि खुले मे आसानी से सांस ले सकते है, और शुध्द हवा मिलती है। उसके विपरीत प्रदूषण एक विपदा है जो हमारे मौजूद वातावरण में मौजूद हवा, जल को दूषित कर रही है। वह दिन दूर नहीं जब हमे खुले वातावरण में सांस लेना भी मुश्किल होगा!

वर्तमान में देखा जा रहा है कि हमारे खाने-पीने की चीजों में भी मिलावट हो रही है।

यहाँ तक जो फसलें उगाई जा रही है उसके पैदावार में बढोत्तरी के लिए उसमें रासायनिक छिडकाव किया जा रहा है जो हमारे स्वास्थ्य के लिए बहुत ही हानिकारक है ।

हमारी कुछ नदियों, तालाब और दुसरे जल स्रोतों को भी उतना प्रदुषित किया गया है कि उसका पानी भी पीने योग्य नहीं रहा है। कारखानो और व्यावसायिक उद्योगों से जो कचरा निकलता है ये भी नदियों और तालाबों में ही फेंका जा रहा है । जल प्रदूषण की सबसे बडी वजह यही है, उसके अलावा कारखानों से निकलने वाले धुएँ की वजह से भी हवा दूषित हो रही है। नए शहरों के निर्माण के लिए जंगलो को काटा जा रहा है, विकास के नाम पर अनगिनत पेडों की कटाई की वजह से हमारे वातावरण का संतुलन बिगड रहा है। ग्लोबल वार्मिंग की समस्या यह पूरी दुनिया समझ चुकी है। पृथ्वी के निरंतर गर्म होने की वजह से यहां पर मौसम में भी अनियमितता देखी जा रही है। पहले के जमाने में ऋतु होते थे तीन जो कि कालखंड रहता है जिसमें मौसम की दशाएँ एक खास प्रकार की होती थी जैसे शीत ऋतु, ग्रीष्म ऋतु वर्षा ऋतु यह तीन प्रमुख मौसम आते थे पर अभी इसमे अनियमीतता देखी जा रही है इसलिए पृथ्वी को हमारा घर समझकर उसकी याने अपने घर की हमे योग्य तरह से देखभाल करनी हैं। वातावरण में होने वाले छेड़छाड़ और प्रदूषणा को अनदेखा करना हमारे लिए और हमारे आनेवाले भविष्य के लिए बहुत बडी मुसीबत का कारण बन सकती है। इससे हम बचकर कही नहीं जा सकते, समय रहते अगर जागरुक नहीं हुए तो हमें कोई नहीं बचा सकता । हमारे जीवन के लिए जरुरी जल, हवा , प्राकृतिक संसाधन को सुरक्षित रखकर हमे अपने जीवन की सुरक्षा करनी है।

जो सेवा बिना आनंद के की जाती है, वह न तो सेवक की मदद करती है और न ही सेवा करने वाले की। - महात्मा गांधी

डीप फेक तकनीक

संकटराम ब्रम्हवंशी
प्रशिक्षु सहा. सह हिन्दी अनुवादक

> "डीप फेक एक तकनीक है जिसमें एक व्यक्ति के चेहरे या आवाज को दूसरे व्यक्ति के चेहरे या आवाज में बदला जाता है। इसके लिए आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस का उपयोग किया जाता है। डीपफेक टेक्नोलॉजी का उपयोग फिल्मों, वीडियो गेम्स और सोशल मीडिया पर वायरल वीडियो बनाने के लिए किया जाता है।"

डीपफेक एक तकनीक है जिसमें एक व्यक्ति के चेहरे या आवाज को दूसरे व्यक्ति के चेहरे या आवाज में बदला जाता है। इसके लिए आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस का उपयोग किया जाता है। डीपफेक टेक्नोलॉजी का उपयोग फिल्मों, वीडियो गेम्स और सोशल मीडिया पर वायरल वीडियो बनाने के लिए किया जाता है।

डीपफेक शब्द 'डीप लर्निंग' और 'फेक' के मेल से बना है। डीप फेक टेक्नोलॉजी की मदद से किसी दूसरे की फोटो या वीडियो पर किसी सेलिब्रिटी वीडियो के फेस के साथ फेस स्वैप कर दिया जाता है। ये देखने में बिलकुल असली वीडियो या इमेज की तरह दिखती है। ये टेक्नोलॉजी ऐसी एल्गोरिदम और पैटर्न का उपयोग करती है, जिसका इस्तेमाल वर्तमान इमेज या वीडियो में हेरफेर करके उसे और ज्यादा वास्तविक बनाने में किया जाता है। इससे बनी वीडियो और इमेज पर लोग आसानी से भरोसा भी कर लेते हैं। ये टेक्नोलॉजी जेनेरेटिव एडवर्सियल नेटवर्क का इस्तेमाल करती है जिससे फेक वीडियो और इमेज बनाये जाते हैं। प्रौद्योगिकी की प्रगति के साथ डीप फेक का पता लगाना कठिन होता जा रहा है। इसका उपयोग फर्जी खबरें उत्पन्न करने और अन्य अवैध कामों के बीच वित्तीय धोखाधड़ी करने के लिये किया जाता है।

डीपफेक तकनीक द्वारा मौजूदा वीडियो को डॉक्टरेट करने के अलावा, स्क्रैच से पूरी तरह से काल्पनिक तस्वीरें बनाई जा सकती है तथा वॉयस क्लोन बनाने के लिए ऑडियो को भी डीपफेक किया जा सकता है। क्लाउड कंप्यूटिंग, एल्गोरिदम और प्रचुर मात्रा में डेटा तक पहुंच ने डीपफेक के निर्माण के लिए एक आदर्श परिदृश्य तैयार किया है। डीपफेक बनाने में लोगों की मदद करने के लिए अब बहुत सारे टूल उपलब्ध हैं, कई कंपनियां इसे एक सेवा के रूप में पेश करती हैं।

डीपफेक शब्द की उत्पत्ति

डीपफेक शब्द की उत्पत्ति 2017 में हुई, जब डीपफेक नाम के एकरेडीट उपयोगकर्ता ने मशहूर हस्तियों के वीडियो पोस्ट किए थे। इस उपयोगकर्ता ने अश्लील वीडियो बनाने और पोस्ट करने के लिये गूगल की ओपन-सोर्स, डीप-लर्निंग तकनीक में हेरफेर किया।

डीपफेक तकनीक का दुरुपयोग

डीप फेक तकनीक का उपयोग घोटालों और झाँसो, सेलिब्रिटी

आप दोस्त बदल सकते हैं, मगर अपने पड़ोसी नहीं। - अटल बिहारी वाजपेयी

डिपफेक तकनिक व्दारा बनाया गया चित्र

पोर्नोग्राफी, चुनाव में हेर-फेर, सोशल इंजीनियरिंग, स्वचालित दुष्प्रचार, पहचान की चोरी और वित्तीय धोखाधड़ी आदि जैसे बुरे उद्देश्यों के लिये किया जा रहा है।

डीप फेक तकनीक का उपयोग पूर्व अमेरिकी राष्ट्रपति श्री बराक ओबामा और श्री डोनाल्ड ट्रंप, भारत के प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी आदि जैसे चर्चित व्यक्तित्वों को प्रतिरूपित करने के लिये किया गया है।

ऐसे कर सकते हैं डीपफेक की पहचान

अगर आपको लगता है कि कोई वीडियो या इमेज डीपफेक है तो उसमें हुए बदलावों पर नजर डाल सकते हैं। कई बार ऐसी वीडियो में आपको हाथ-पैर कि मूवमेंट पर ज्यादा नजर देनी चाहिए। कुछ प्लेटफॉर्म एआई जनरेटेड कंटेंट के लिए वॉटरमार्क या अस्वीकरण जोड़ते हैं कि कंटेंट एआई से जनरेट किया गया है। हमेशा ऐसे निशान या डिसक्लेमर को ध्यान से चेक करें।

आजकल बहुत सारे एआई टूल मौजूद हैं जो एआई जनरेटेड कंटेंट को आसानी से पकड़ सकते हैं। ए.आई. और नॉट और हाई माडेरेशन जैसे कई ए.आई. टूल भी काम में आ सकते हैं, जो ए.आई.-जनरेटेड कंटेंट का पता लगा सकते हैं। डीपवेयर स्केनर एक ऐसा टूल है जिसकी मदद से आप किसी इमेज या वीडियो को डीपफेक पता करने के लिए इस्तेमाल कर सकते हैं। इसके अलावा भी ढेरों टूल ऑनलाइन उपलब्ध हैं।

डीपफेक का पता लगाने और उसका प्रतिकार करने के प्रयास चल रहे हैं, जिन्होंने गलत सूचना फैलाने, फर्जी समाचार बनाने और दर्शकों को धोखा देने के लिए इमेज और वीडियो कंटेंट में हेरफेर करने की अपनी क्षमता के कारण ध्यान आर्कषित किया है। नीति निर्माता, शोधकर्ता और बड़ी टेक कंपनियां इस टेक्नोलॉजी के बारे में जागरूकता बढ़ाने और इसके संभावित दुरुपयोग को दूर करने के तरीके खोजने के लिए सक्रिय रूप से काम कर रही हैं।

डीपफेक से संबंधित चुनौतियाँ

जैसा कि किसी भी नवीन तकनीक के साथ होता है, डीपफेक का भी नुकसान पहुंचाने के हथियार के रूप में उपयोग किया जा सकता है। अति-यथार्थवादी डिजिटल मिथ्याकरण होने के कारण, डीपफेक को प्रामाणिक मीडिया से अलग करना बहुत कठिन हो जाता है। इसका उपयोग दुष्प्रचार को आसानी से अभूतपूर्व गति के साथ फैलाने के लिए किया जा सकता है। साथ ही विद्रोही समूहों और आतंकवादी संगठनों द्वारा भड़काऊ भाषण देने या लोगों के बीच राज्य विरोधी भावनाओं को फैलाने के लिए भी किया जा सकता है।

डीपफेक द्वारा किसी व्यक्ति को असामाजिक व्यवहार में लिप्त या अनुचित बातें कहते हुए चित्रित किया जा सकता है, इसके माध्यम से किसी व्यक्ति की प्रतिष्ठा पर गंभीर प्रभाव डाला जा सकता है, उसके पेशेवर और व्यक्तिगत जीवन को बर्बाद किया जा सकता है। यह व्यक्तिगत सुरक्षा जोखिम भी पैदा कर सकता है, इसके माध्यम से बायोमेट्रिक डेटा की नकल की जा सकती है, और चेहरे या आवाज की पहचान पर आधारित सिस्टम को संभावित रूप से धोखा दिया जा सकता है।वित्तीय धोखाधड़ी या गोपनीय जानकारी प्राप्त करने के लिए भी इसका इस्तेमाल किया जा सकता है।

सार्वजनिक सुरक्षा को कमजोर करने और देश में अनिश्चितता और अराजकता पैदा करने के लिए इसका एक उपकरण के रूप में प्रयोग किया जा सकता है। साथ ही इसका प्रयोग संस्थानों, सार्वजनिक नीति और राजनेताओं के बारे में गलत जानकारी देकर, चुनाव परिणामों को प्रभावित करने के लिए किया जा सकता है।

> **डीपफेक का महत्व**
>
> सभी डीपफेक दुर्भावनापूर्ण नहीं होते हैं बल्कि कुछ मनोरंजक और सहायक भी होते हैं। इसके प्रयोग से वीडियो गैलरी और संग्रहालयों को सजीव कर सकते हैं।

डीपफेक का प्रयोग करके अदालतों में नकली घटनाओं को

सबूत के रूप में पेश किया जा सकता है तथा झूठे सबूत बनाने के लिए भी इसका प्रयोग किया जा सकता है। इससे होने वाले अल्पकालिक नुकसान के अतिरिक्त, यह समाचार मीडिया में जनता के विश्वास को कम करके दीर्घकालिक सामाजिक नुकसान पहुंचाने में भी सक्षम है।

भविष्य में इस तरह का कार्य एक अविश्वनीय एवं असंवेदनशील समाज के निर्माण की ओर ले जाएगा , जहाँ लोग सत्य और असत्य के बीच अंतर नहीं कर पाएंगे।

मनोरंजन उद्योग के लिए, विदेशी भाषा की फिल्मों पर डबिंग को बेहतर बनाने के लिए डीपफेक प्रौद्योगिकी का उपयोग किया जा सकता है। यदि किसी गंभीर बीमारी या अन्य किसी कारण से किसी व्यक्ति की आवाज चली जाती है, तो डीपफेक के प्रयोग द्वारा उसे दोबारा तैयार किया जा सकता है।

डीप फेक से निपटने के लिये भारत का योगदान:

हालाँकि भारत में डीप फेक तकनीक के इस्तेमाल के खिलाफ कोई कानूनी नियम नहीं हैं।इस तकनीक के दुरुपयोग के संबंध में विशिष्ट कानूनों की मांग की जा सकती है, जिसमें कॉपीराइट उल्लंघन, मानहानि और साइबर अपराध आदि शामिल हों। केन्द्र सरकार नें डीपफेक वीडियो और फेक न्यूज पर सख्ती की तैयारी कर ली है। सोशल मीडिया पर प्रसारित होने वाले वीडियों, फेक न्यूज एवं सिंथेटिक वीडियो (काट छाट कर बनाये गये वीडियो की जिम्मेदारी इन प्लेटफार्मों की होगी।

आगे की राह

मीडिया उपभोक्ताओं के रूप में हमें मिलने वाली जानकारी की व्याख्या, समझ और उपयोग करने में सक्षम होना चाहिये।इस समस्या से निपटने का सबसे अच्छा तरीका कृत्रिम बुद्धिमत्ता द्वारा समर्थित तकनीकी समाधान है जो डीप फेक की पहचान कर सकता और उन्हें ब्लॉक कर सकता है। इससे जुड़े मुद्दों को हल करने से पहले मीडिया साक्षरता में सुधार करने की आवश्यकता है। इसका पता लगाने, मीडिया को प्रमाणित करने और आधिकारिक स्रोतों को बढ़ाने के लिये उपयोग में आसान और सुलभ प्रौद्योगिकी समाधानों की भी आवश्यकता है। भ्रामक सूचनाओं और डीपफेक से निपटने के लिए उपभोक्ताओं और पत्रकारों के लिए मीडिया साक्षरता सबसे प्रभावी उपकरण है। मीडिया साक्षरता मीडिया के संदेशों को पहचानने और समझने की क्षमता है, लोगों को इस तथ्य से अवगत होना चाहिए कि अधिकांश मीडिया संदेश लाभ और या शक्ति प्राप्त करने के लिए आयोजित किए जाते हैं।

यह समझ उन्हें मिलने वाली जानकारी को समझने, अनुवाद करने और उसका उपयोग करने में सक्षम बनायेगी।मीडिया साक्षरता के प्रति जनता की जागरूकता बढ़ाने के लिए प्रयासों को बढ़ाया जाना चाहिए, इससे डीपफेक से होने वाले नुकसान को कम किया जा सकता है। इससे उत्पन्न चुनौती का मुकाबला करने में आम नागरिकों की महत्वपूर्ण भूमिका है, लोगों को सोशल मीडिया पर साझा करने से पहले किसी संदेश की प्रामाणिकता के बारे में सोचना और उसका मूल्यांकन करना चाहिए।

डीपफेक के प्रभावी नियमन के लिए प्रौद्योगिकी उद्योग, नागरिक समाज और नीति निर्माताओं के बीच सहयोग की आवश्यकता है। इसका पता लगाने के लिए उपयोग में आसान और सुलभ प्रौद्योगिकी समाधानों की भी आवश्यकता है, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के द्वारा नकली वीडियो का पता लगाया जा सकता है।

ब्लॉकचेन प्रणाली का प्रयोग करके वीडियो, चित्रों और ऑडियो से संबंधित छेड़छाड़ का रिकॉर्ड रखा जा सकता है, इसके माध्यम से उसकी उत्पत्ति और किसी भी हेरफेर को जांचा जा सकता है।घटनाओं के बारे में लोगों को सूचित करने में मदद करने के लिए प्रामाणिक और आधिकारिक स्रोतों को और अधिक दृश्यमान बनाया जाना चाहिए, इससे डीपफेक के प्रभावों को कम करने में मदद मिलेगी।

अभी हाल ही में भारत के प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी ने डीप फेक बनाने के लिए आर्टिफिशियल इंटलीजेंस के दुरुपयोग को चिह्नित किया और कहा कि मीडिया को इस समस्या के बारे में लोगों को शिक्षित करना चाहिए।

> "समाज के स्तर पर, डीप फेक के खतरों का मुकाबला करने के लिये, इंटरनेट पर मीडिया के एक महत्वपूर्ण उपभोक्ता होने की जिम्मेदारी लेने की आवश्यकता है, सोशल मीडिया पर साझा करने से पहले सोचने और समझने, एवं समाधान का हिस्सा बनने का प्रयास करना चाहिये। इसमें उत्पन्न गंभीर खतरे का मुकाबला करने के लिए एक बहु-हितधारक और बहु-आयामी दृष्टिकोण की आवश्यकता है, इस संबंध में सरकार की महत्वपूर्ण भूमिका है।"

मॉयल लिमिटेड

गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग
नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (का-1), नागपुर
वर्ष 2022-23
राजभाषा की श्रेष्ठ गृहपत्रिका के लिए
प्रथम पुरस्कार
"मॉयल भारती"
मॉयल लिमिटेड, नागपुर